।। ॐ श्री सत्नाम साक्षी ।।

ई-पेपर

समाचार-पत्र

प्रेम प्रकाश सन्देश

श्री प्रेम प्रकाश मण्डल का आध्यात्मिक मासिक समाचार पत्र

15 सितम्बर 2025 वर्ष 18 अंक 06

कुल पृष्ठ - 30 वार्षिक शुल्क : ₹ 200/- (भारतवर्ष में), ₹ 2000/- (विदेश में), एक प्रति ₹ 20/-

सद्गुरु टेऊँराम अमृतवाणी

आवतराम जी के चाचा सेठ नोतनदास जी गुरु महाराज जी को कहने लगे कि आवत तो आपके प्रेम में मस्त हो गया है। आपके साथ खाही गाँव तक चल रहा है, आप इसे जल्दी से वापस भेज देने की कृपा करें। खाही गाँव के पंच जो गाँव से बाहर स्वागत सत्कार के लिये पहले से ही खड़े थे, उन लोगों ने दूर से ही जब गुरु महाराज जी को आते हुए देखा तो किसी से भी रहा नहीं गया, वे सब के सब गुरु महाराज जी की ओर दौड़ पड़े। वहां जाकर गुरु महाराज जी का स्वागत सत्कार कर फिर गाते-बजाते नाचते चले आ रहे थे, चोइथबाल व आवतराम जी भी नाच रहे थे।

यह शोभा यात्रा जब गाँव के बीच में आयी तब आवतराम को नाचता हुआ देख कर खाही गाँव के लोग बड़े हैरान हो गये और कहने लगे कि यह सेठ जी जिसने कि कभी किसी साधु-सन्त को नमस्कार तक नहीं किया सो आज मस्ती में नाच रहा है। देखो तो सही पगड़ी में पंख आदि न जाने क्या डाल रखा है और अपने ही ससुराल के गाँव में नाच रहा है। आवतराम जी को नाचता हुआ देखकर उसके ससुराल वालों के लज्जा के मारे मस्तक ही नीचे झुक गये। सब लोग गुरु महाराज जी को दरबार में ले आये। वहाँ पर ही सब व्यवस्था की गयी थी। इतने में सत्संग का समय भी हो गया था और नियमानुसार सत्संग हुआ जो रात को एक बजे तक चला। सत्संग समाप्त होने पर गुरु महाराज जी सन्तों-मेहमानों के साथ भोजन करने के लिये बैठे। भोजन करने वालों की भीड़ देखकर भाई वाटूराम, भाई सोमनराम घबराकर बहुत धीरे से गुरु महाराज जी को अचानक उपस्थित हुई स्थिति को बतला कर कहने लगे कि हे भगवन् ! भोजन व्यवस्था तो केवल सौ-सवा सौ लोगों के लिये ही की गयी है, परन्तु यहाँ पर तो चार-पाँच सौ लोग बैठे दिखलाई पड़ रहे हैं। अब जो आपकी आज्ञा हो वैसा करें।

यह सुन कर गुरु महाराज जी ने जहाँ तैयार भोजन भण्डार था वहाँ जा कर सेवाधारियों को लोटा माँज कर साफ-सुथरा पानी भर लाने के लिये आज्ञा देकर चटाइयाँ बिछवा कर रंधे हुए चावलों की बड़ी दो देगों को बिछाई गयी चटाइयों पर डलवा कर एक स्वच्छ व श्वेत कपड़ा लाने की आज्ञा दी। तत्काल आज्ञा का पालन किया गया। फिर गुरु महाराज जी सत्नाम साक्षी कह कर पक्के तैयार भोजन पर पानी के छींटे छिड़क कर स्वच्छ चादर से ढक कर फिर करछी से चावल निकाल कर बाल्टी भर कर वह करछी सोमनराम जी को देकर कहने लगे कि अब आप दिल में सत्नाम साक्षी बोलते हुए भोजन निकालते जाना और सेवाधारी लोग खिलाते जायें। यह आज्ञा देकर गुरु महाराज जी आकर पंगत में बैठे। फिर भोजन चालू हुआ। जब सब सन्त मेहमान लोग भोजन खा कर उठे। तब गुरु महाराज जी ने भण्डार में जाकर भाई

शेष पेज नं. 2 पर...

पेज नं. 1 से आगे...

सोमनराम जी से पूछा कि कैसे, भोजन है? यह सुन कर सोमनराम उठकर हाथ जोड़कर कहने लगे हे प्रभो! भोजन तो अब बहुत ही पड़ा है। यह सुन कर गुरु महाराज जी कहने लगे कि अब सब सेवाधारी लोग भोजन करें, बाद में जो भोजन बचे वह बाहर खड़े भिखारियों को खिला देना। यह आज्ञा देकर गुरु महाराज जी जाकर आरामी हुए।

प्रातः सवेरे नित्यकर्मों से निपट कर गुरु महाराज जी सात बजे सत्संग मण्डप में आये। वहाँ पर मुखी बहरूराम जी ने विनय कर गुरु महाराज जी से कहा कि आप की आज्ञा हो तो कुछ पूछें। यह सुन कर गुरु महाराज जी ने कहा कि जो कुछ पूछना हो वह भली पूछो। आज्ञा पाकर मुखी बहरूराम जी ने निम्नलिखित दो श्लोकों का अर्थ पूछा।

श्लोक - **बाँभण ज़ाओ ब़ारू, निपूंसक जे नारि खे। जहिंजो रंगु न रूपु को, न को अंगु आकारु।**
ड़िसी जीउ ठरी पयो, तहिंजो दिव्य दीदारु। अज़िगैबी इसिरारु, अचे न वाणीअ वात में।

मुखी बहरूराम जी के द्वारा पूछे गये एक श्लोक का अर्थ बतलाते हुए गुरु महाराज जी कहने लगे कि महान् अनुभवी सामी साहब जी कहते हैं कि ब्रह्म जो है वह नपुंसक है। न स्त्री है न पुरुष है। ब्रह्माकार वृत्ति ही उस ब्रह्म की पत्नी है। उस ब्रह्माकार वृत्ति रूपी पत्नी के ज्ञान रूपी बालक का कोई रंग, रूप अथवा आकार नहीं है। जो रूप रंग से रहित है उसका दीदार करना ही आश्चर्य है। ऐसा आश्चर्य देख कर यह जीव जो तापों क्लेशों से तप रहा था, वह शीतल हो जाता है। उस आश्चर्यमय निर्वाण पद का वाणी द्वारा कथन किया नहीं जा सकता। अब दूसरे श्लोक का अर्थ बतलाते हुए गुरु महाराज जी कहने लगे कि-

श्लोक- **घड़ो भगो मुंध मुई, वसीला विया। तिहां पोइ सुआ, सुहिणीअ सद मेहार जा।**

शरीर का मिथ्या अभिमान एक घड़ा है। मुंध माने ममता, अथवा स्थूलाकार वृत्ति। मिथ्या अभिमान के नाश होने पर ममता भी मर जाती है। माने जो स्थूलाकार वृत्ति बहिर्मुख हो रही थी वह सूक्ष्म होकर अन्तर्मुख हो जाती है। इस असार संसार के समस्त नाते, भरोसे तथा सहारे जब टूट जाते हैं तब ''सुहिणी''(सुहिणी एक नारी थी जिसका प्रेम मेहार नामक पुरुष से था जो नदी के पार रहता था। यह एक लम्बा किस्सा है) माने जिज्ञासु को सद्गुरु द्वारा बताए गये वेदान्त के महावाक्य जो कि यथार्थ वाणी है, वह सुनाई पड़ती है और सम्यक् प्रकार से समझ में आ जाती है। उपरोक्त श्लोकों का अर्थ गुरु महाराज जी के श्रीमुख से सुन कर मुखी बहरूमल व सब लोग प्रसन्न हुए।

उधर भोजन भण्डार वाली बात पूरे गाँव में बिजली की तरह फैल गयी कि एक सौ लोगों के लिये बने भोजन में से स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने पाँच सौ लोगों को भोजन खिलाया है। सायंकाल होने पर गुरु महाराज जी सन्तों-भक्तों को साथ ले कर जंगल की सैर करते हुए भाई हुरियाराम के कुएँ पर आये, भाई हुरियाराम जी ने टारी नामक पेड़ की छाया में खाट बिछा कर गुरु महाराज जी को खाट पर बिठाया। बाकी सब लोग बिछी हुई चटाइयों पर बैठ गये। जब सब लोग बैठ गये तब वहाँ पर महाराज जयरामदास जी ने प्रश्न करते हुए कहा कि शास्त्र कहते हैं कि मनुष्य के अन्दर भगवान का निवास है। सो वह भगवान मनुष्य के किस विशेष स्थान पर विराजमान रहता है और उस का दर्शन कैसे होगा? शंका का समाधान करते हुए गुरु महाराज जी कहने लगे कि-

कवित्त-

कोऊ तो कहत ब्रह्म, नाभी के कमल मध्य,
कोऊ तो कहत ब्रह्म, हृदय में प्रकाश है ।
कोऊ तो कहत कण्ठ, नासिका के अग्र भाग,
कोऊ तो कहत ब्रह्म, भृकुटी में वास है ।।
कोऊ तो कहत ब्रह्म, दशमें द्वार बीच,
कोऊ तो कहत भ्रमर, गुफा में निवास है ।
पिण्ड में ब्रह्माण्ड में, निरन्तर बिराजे ब्रह्म,
सुन्दर अखण्ड जैसे, व्यापक आकाश है ।।

शेष अगले अंक में...

।। ॐ सत्नाम साक्षी ।।
श्री प्रेम प्रकाश मण्डल का आध्यात्मिक मुखपत्र

प्रेम प्रकाश सन्देश

15 सितम्बर 2025

वर्ष 18 अंक 6

मंगल आशीष

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज
सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज
सद्गुरु स्वामी शांतिप्रकाशजी महाराज
सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज

संस्थापक
सद्गुरु स्वामी शांतिप्रकाशजी महाराज

संरक्षक–मार्गदर्शक–प्रेरणास्त्रोत
सद्गुरु स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज

सदस्यता शुल्क

अवधि	भारत में	विदेश में
एक वर्ष के लिये	₹ 200	₹ 2000
दो वर्ष के लिये	₹ 400	₹ 4000

मनीआर्डर भेजने व पत्र व्यवहार के लिये पता :
व्यवस्थापक, प्रेम प्रकाश सन्देश
प्रेम प्रकाश आश्रम, गाढ़वे की गोठ,
लश्कर, ग्वालियर-474001 (मध्यप्रदेश)
मोबा. 0751-4045144
सम्पर्क समय : प्रात 8 से 10 बजे तक (तात्कालिक व्यवस्था)
e-mail : premprakashsandesh@gmail.com

Bank Facility

आईडीबीआई बैंक में आप कोर सुविधा/मनी ट्रांसफर के माध्यम से भी निम्न खाते में शुल्क जमा कराके फोन 0751-4045144 पर अथवा व्हाट्स् एप नम्बर 8989701236 पर सूचना दे सकते हैं.

A/c 92610010000468
Net Bankig : IFSC: IBKL0000545
Editor Prem Prakash Sandesh, Gwalior

नई सदस्यता अथवा नवीनीकरण के लिये सदस्यता शुल्क आप मनीआर्डर/कोर बैंक माध्यम के अलावा सद्गुरु महाराज जी की यात्रा के समय बुक स्टॉल पर व देश भर के विभिन्न शहरों में हमारे प्रतिनिधियों के पास जमा कर सकते हैं. इसके अलावा परम पावन गुरु धाम श्री अमरापुर दरबार (डिब्), जयपुर के श्री अमरापुर सत्साहित्य केन्द्र में प्रतिदिन एवं रविवार प्रातः 8 से 12 व प्रत्येक गुरुवार-शनिवार सायं 5 से 8 बजे तक श्री कुमार चन्दनानी, श्री नारायणदास रामचंदानी, श्री निहालचंद तेजनानी व श्री अशोक कुमार पुरसानी के पास जमा किया जा सकता है.

जय जय जय स्वामी सर्वानन्द

संवत् 1954 आश्विन का पावन माह,
चतुर्दशी गुरुवार दिवस मन में था भरा उछाह।
सेवकराम ईश्वरी के घर प्रकटे सर्वानन्द,
मामा टेऊँराम के मन में छाया आनन्द।
नाना-नानी चेलाराम-कृष्णा फूले नहीं समायँ,
बालक का अति प्यारा मुखड़ा नित प्रति निरखें जाय।
शाह भिट्ट में जन्में पावन हो गया सुन्दर ग्राम,
अब भी गूँज रहा कण-कण में श्री सांई का नाम।
पंडित अरु सब गुरुजनों ने दीना सीरू नाम,
थे कुशाग्र मन से विरक्त जप करते प्रातः शाम।
तप में तपा शरीर और वह तेजोमय मुस्कान,
मानों तन मन पर बरसे नारायण का वरदान।
लीनी दीक्षा नाम मिला नव सांई सर्वानन्द,
जहाँ करें सत्संग भक्ति के गूँजे स्वर संग छन्द।
गंगा के पावन तट पर चित पाए शान्ति अपार,
मोक्षदायिनी पापनाशिनी सुरसरि की वह धार।
डूबा प्रेम रंग में प्रेमी जिसने दर्शन कीन्हें,
सांई की छबि में मानों हरि प्रकटे दर्शनी दीन्हें।
कष्ट मिटें मन शान्त होय, सुधरें सब बिगड़े काज,
भक्त प्रेम से बोले यदि जय सर्वानन्द महाराज।

अनुक्रमणिका

अनुक्रम	विषय	पृष्ठ
01.	सद्गुरु टेऊँराम अमृतवाणी	1–2
02.	सनातन धर्म के रक्षक-समर्थ सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज	4
03.	ब्रह्मर्षि सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज	5–7
04.	आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज द्वारा सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज को नाम-दान व सन्यास की कथा-वार्ता	8–12
05.	आचार्य श्री के परम उपासक स्वामी सर्वानन्द जी महाराज	13–14
06.	गुरु के प्रति निष्ठा एवं पक्का विश्वास	15
07.	सद्गुरु सर्वानन्द महिमा भजन, महर्षि सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जन्मोत्सव सूचना	16
08.	सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द महिमा	17
09.	शारदीय नवरात्र व्रत-विधान	18
10.	भगवान श्री झूलेलाल सांई जी का संक्षिप्त जीवन परिचय	19
11.	भक्त पुण्डरीक की कथा	20
12.	गुरु वचनों का करें आदर	21–22
13.	भक्त और भगवान का संबंध (प्रेरक प्रसंग)	23
14.	जीवन का अंतिम सत्य	24
15.	कुरुक्षेत्र में 700 श्लोकीय हवन-यज्ञ सम्पन्न-समाचार	25
16.	समाचार डायरी	26
17.	भजन श्री हरकेश वधवा	27
18.	पूज्य गुरुवर स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज एवं संत मण्डली का यात्रा कार्यक्रम	28–29
19.	व्रत – पर्व – उत्सव + सूचना,	29
20.	ब्रह्मदर्शनी (सिंधीअ में समुझाणी)	30

सनातन धर्म के रक्षक-समर्थ सद्गुरु टेऊँराम जी महाराज

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम बाबा की अद्भुत महिमा

धर्म अपने माहिं हरदम, प्यार कर नटना नहीं।
सीस जावे जान दें पर, धर्म से हटना नहीं।।

हर एक मनुष्य को अपने धर्म पर स्थित रहना चाहिए. अपना धर्म ही सर्वश्रेष्ठ होता है. अपने जाति धर्म से ही प्रेम करना चाहिए. ऐसे ही सनातन धर्म का उपदेश-प्रचार-प्रसार कर श्री गुरु महाराज जी ने जन-जन के हृदय में अलख जगाई. अखण्ड भारत का सिंध प्रदेश, जहाँ पर सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के स्वर्णकाल में भी जहाँ-तहाँ अनेक लोग विधर्मियों के चंगुल में फँसकर अपने सनातन धर्म से विमुख हो रहे थे.

१८वीं सदी के उतरार्ध की बात होगी जब कादरपुर शहर (सिंध) में सनातनधर्मी आर्यसमाज का बोलबाला था. परन्तु फिर भी कुछ लोग मज़ार (कब्र) पर मनौती के लिए जाया करते थे. कर्मचन्द नाम का एक हिन्दू अपनी स्त्री सहित, पुत्र प्राप्ति के लिए कादरपुर शहर के बाहर बने एक मुसलमान पीर की मज़ार के आगे जाकर यह संकल्प करके बैठा कि 'जब पीर साहब मुझे आवाज देंगे तब ही यहाँ से हटूँगा.' उसे वहाँ से हटाने के लिए आर्यसमाजियों हिन्दू धर्मावलम्बियों ने बहुत ही ज़ोर लगाया, परन्तु वह हिन्दू (कर्मचन्द) कब्र से नहीं उठा.

भक्तवत्सल सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज द्वारा सनातन धर्म का प्रचार एवं उनका प्रभाव सुनकर और उनकी वाणी में शक्ति देखकर, सब आर्यसमाजियों ने मिलकर सद्गुरु महाराज जी से प्रार्थना की कि हे प्रभो! एक हिन्दू इस मुसलमान पीर की कब्र पर पुत्र-प्राप्ति के हेतु जा बैठा है. हमने उसे समझाने में बहुत ही ज़ोर लगाया है परन्तु वह हमारी बात मानता ही नहीं और कहता है- जब पीर साहब मुझे पुत्र होने के लिए आवाज़ देंगे, तब ही यहाँ से उठूँगा. अतः आप कृपा कर, समझा कर अपने धर्म-मार्ग पर ले आइए. आर्यसमाजियों की यह विनती सुनकर सद्गुरु महाराज जी कहने लगे- 'कल वहाँ लेकर चलना और दिखाना, ईश्वर सब ठीक करेंगे.'

अगले दिन प्रातःकाल भाई लालूराम खैराज भगतजी के सुपुत्र, भाई छिणकूराम और अन्य कई प्रेमियों ने, सद्गुरु महाराज जी को ले जाकर वह हिन्दू परिवार दिखलाया. श्री गुरु महाराज जी ने उस प्रेमी पर कृपादृष्टि बरसाते हुए बड़े ही प्रेमभाव से पूछा- बाबा! जरा समाचार तो सुनाओ, आप खुश प्रसन्न तो हैं? यहाँ क्यों आकर बैठे हैं? श्री गुरु महाराज जी की शहद से सनी मृदुल वाणी सुनकर वह सद्गुरु महाराज जी की ओर देखकर, चरण-स्पर्श कर, हाथ जोड़कर कहने लगा- भगवन्! मुझे यहाँ बैठे हुए करीब दो-तीन महीने हो गये हैं! मुझे यहाँ से पुत्र की प्राप्ति होगी, इसी मन्नत से यहाँ बैठा हूँ. यह सुनकर सद्गुरु महाराज जी ने उनसे कहा- **'बस, पुत्र ही चाहिए न. प्रभु परमात्मा तुम्हें शीघ्र ही पुत्र देंगे. आप चिन्ता न करें. अच्छा आप दोनों स्त्री-पुरुष यहाँ से उठकर हमारे साथ शहर में चलो और प्रतिदिन आध-एक घण्टे तक सत्नाम साक्षी महामंत्र का जाप करो तो भगवान तुम्हें पुत्र देंगे.'** इतना सुनकर वह प्रेमी गद्-गद् होकर कहने लगा- ठीक है दीनानाथ जी! हम चलते हैं. जैसे आप ने आज्ञा दी है वैसे ही करेंगे.

सद्गुरु महाराज जी के वचनों में ऐसी अद्भुत शक्ति एवं जादू भरा हुआ था कि वह प्रेमी और कुछ बोल ही न सका. तुरंत अपनी स्त्री को साथ लेकर, सद्गुरु महाराज जी के साथ शहर आया. रात के सत्संग में शामिल हुआ और दर्शन किए.

दूसरे दिन प्रातःकाल में भाई कर्मचन्द जो कि कब्र पर जा बैठा था, आकर सद्गुरु महाराज के चरण-स्पर्श कर हाथ जोड़कर कहने लगा- 'हे प्रभो! हमें जो शारीरिक दुःख था उसमें आज रात ही काफी फायदा हो गया है. अब मुझे पूर्ण विश्वास हो गया है कि आप की कृपा से हमें अवश्य ही पुत्र- प्राप्ति होगी, आपने हमें जो सत्नाम साक्षी महामंत्र का मंत्र दिया है, उसका जाप नियमपूर्वक करते रहेंगे. अब हमें आशीर्वाद दीजिए कि मन सदैव आपके श्रीचरणों में लगा रहे.' इतना कहकर सद्गुरु महाराज जी के चरण-स्पर्श किये. महाराजश्री ने अपने वरद् हस्त उसके ऊपर रखकर आशीर्वाद दिया. वह प्रेमी अपने घर चला गया.

इधर कादरपुर के तमाम आर्यसमाजी जो वहाँ उपस्थित थे, यह देखकर आश्चर्य-चकित हो गये और परस्पर कहने लगे- हमने बहुत ही प्रयत्न किये और पैसे देने का भी वादा किया परन्तु वे सब निरर्थक सिद्ध हुए. संतों की कृपादृष्टि से थोड़े ही कहने पर विश्वास रखकर वह अपने घर आया. यह बहुत ही अच्छा हुआ जो संतों ने हमारी नगरी में पधारकर धर्म की रक्षा की. ऐसी शक्ति देखकर सभी लोग गुरु महाराज जी की जय-जयकार करने लगे.

पूरे सिंध देश का रटन करके अपने अमृतरूपी वचनों की वर्षा कर उलझे हुए लोगों को सत्धर्म के मार्ग में प्रतिष्ठित करने वाले परम पुरुष योगीराज, आचार्यश्री श्री १००८ सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के पावन श्रीचरणों में कोटिशः नमन-वन्दन!

-साधक, श्री अमरापुर दरबार (डिब्), जयपुर

सद्गुरु टेऊँराम अमृतोपदेश
समय बहुत कीमती होता है, उसे बेकार की बातों में नहीं गंवाना चाहिए, अपितु सत्संग करके समय का सदुपयोग करना चाहिए।

ब्रह्मर्षि सत्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज

129वें अवतरण दिवस 05 अक्टूबर पर विशेष

(सत्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज)

परम श्रद्धेय प्रातः स्मरणीय ब्रह्मर्षि सद्‌गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज का इस धराधाम पर अवतरण सम्वत् १९५४ के आश्विन मास की चतुर्दशी (सिन्धी असू की तारीख १२) गुरुवार के शुभ मंगलमय दिन, सिन्ध देश के सिन्धु दरिया के समीप स्थित भिट्टशाह नामक एक छोटे से गाँव में कीर्तिमान पिता भक्तवर श्री सेवकराम एवं यशस्विनी माता श्रीमती ईश्वरीदेवी के घर आँगन में हुआ. ब्राह्मणों को बुलवाकर नवजात शिशु का नामकरण संस्कार किया गया. ब्राह्मणों ने बालक का नाम 'सीरू' रखकर सबको बधाई दी और स्वागत- सत्कार भेंट पाकर अपने घर गये.

आचार्य सद्‌गुरु श्री स्वामी टेऊँराम जी महाराज, जो कि उस वक्त दस वर्ष के थे, ने बालक को कृपादृष्टि से देखा और अपनी गोद में उठाकर उसका सिर चूमा तथा सिर पर अपना कर कमल फेरा. इससे बालक परम भाग्यशाली हुआ. स्वामी जी के दोनों कुल भक्ति परायण थे, इसलिये स्वामी जी पर बचपन से ही भक्ति का प्रभाव पड़ा. पिता एवं नाना के घर रोज सत्संग होता था. इसलिये सहजता में ही स्वामी जी को सत्संग सुनने का सौभाग्य प्राप्त होता था. स्वामीजी बड़ी लगन से ध्यानपूर्वक सुनते थे और संतों के आचरण भी देखते थे. सत्संग द्वारा स्वामी जी को व्यवहार एवं परमार्थ का पर्याप्त ज्ञान हो गया. अब उन्हें सत्गुरु धारण करने की स्वयं इच्छा बलवती हुई. सत्गुरु की खोज करने के लिये उन्हें कहीं दूर जाना नहीं पड़ा; क्योंकि उनके मामा जी आचार्य श्री श्री १००८ सद्‌गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज, जो कि श्री प्रेम प्रकाश मण्डल के आचार्य थे और सर्व सद्‌गुणों की खान थे. इसलिये स्वामी जी ने आचार्य जी को गुरु करने का निश्चय कर लिया.

निकट सम्बन्ध होने के कारण स्वामी जी अपने मामा के घर खण्डू गाँव में जाते रहते थे. इस बार वे जीवन की अत्युत्तम इच्छा को लेकर खण्डू आये. आचार्य जी भी स्वामी जी के मनोगत विचारों को जान गये और कठोर से कठोर परीक्षा लेने की सोचकर आचार्य जी स्वामी जी को दुबारा आने की आज्ञा देकर स्वयं कहीं चले गये. मन की इच्छा को दबाकर स्वामी जी अपने घर भिट्टशाह लौट आये. लेकिन बढ़ती हुई तीव्र इच्छा ने उन्हें चैन से रहने नहीं दिया. कई बार उन्हें खाली लौटना पड़ा फिर भी स्वामी जी हताश नहीं हुए. अंत में उनकी श्रद्धायुक्त सच्ची भक्ति ने निराशा को आशा में बदल दिया और एक दिन आचार्य जी ने सीरू को बुलाकर गुरु मंत्र से दीक्षित किया और उनका नाम बदलकर सर्वानन्द रखा और पूछा कि क्या तुम्हारी इच्छा पूरी हुई? स्वामी जी ने हाथ जोड़कर कहा कि जी, गुरुदेव! यह सुनकर आचार्य जी कहने लगे कि केवल दीक्षा ही जीवन की सफलता नहीं है परन्तु शिक्षा का होना भी बहुत जरूरी है. ऐसा कहकर आचार्य जी ने उन्हें शिक्षा दी. जो-जो शिक्षा आचार्य जी ने उन्हें दी, उनका वे जीवन भर पालन करते रहे. संक्षेप में आचार्य जी की पवित्र वाणी में शिक्षाएँ इस प्रकार हैं-

।। भजन राग पहाड़ी ।।

टेक : **सद्‌गुरु बोले सुन रे चेला,**
साधु कहावन सुगम नहीं है साधन काम दुहेला ।।

1. सेवा स्मरण निशदिन करना, काटन भुख का वेला।
   तांते समझी पाँव सु धरना, आतप शीत सहेला।।
2. लोक निन्दा को सिर पर सहना, जग में चरन अभेला।
   तीन लज्जा को तोड़के चलना, भव ते रहन अकेला।।
3. पाँच विषय की आस न करनी, इन्द्रियां जीत रहेला।
   अन्तर आतम चिन्तन करना, है यह अद्‌भुत खेला।।
4. कहता टेऊँ कठिन फकीरी, यह ना गैल सुहेला।
   जीव ईश की कटे उपाधी, करन ब्रह्म से मेला।।

1. सेवा करना, 2. स्मरण करना, 3. उपवास करना, 4. सुख-दुःख सहन करना, 5. लोक निन्दा को सहन करना, 6. तीन लज्जाओं को तोड़ना, 7. निर्भय

सद्‌गुरु सर्वानन्द सन्देश

ज्ञान, ध्यान, आत्म विचार, नियम, प्रेम, शील, संतोष, उत्तम बुद्धि इत्यादि कुछ भी गुरु की कृपा के बिना नहीं मिल सकता।

रहना, 8. पाँच विषय को जीतना, 9. इन्द्रियों को वश में रखना, 10. आत्म चिन्तन करना, 11. जीव ईश का भेद मिटाना, 12. एकान्तवास करना, इत्यादि.

आचार्य जी स्वामी जी से कहने लगे कि जब तक तुम्हारे शरीर में प्राण हैं- (१) सेवा करते रहना, (२) स्मरण करते रहना. सिंध के टण्डेआदम शहर में स्थित अमरापुर दरबार (डिब्) पर होने वाली सेवा का तो हमने केवल नाम सुना है, पर यहाँ भारत में राजस्थान के जयपुर नगर में अमरापुर स्थान की तो मुझे पूरी याद है कि सुबह से लेकर शाम तक स्वामी जी सेवा में लगे रहते थे. मिट्टी पत्थर उठाने तक की सेवा में भी वे नहीं चूकते थे. स्वामी गुरुमुखदास जी जो कि अवधूत व एक सच्चे संत थे, भी रात-दिन सेवा में लगे रहते थे. स्वामी जी ने स्मरण को तो अपने जीवन का अंग ही बना लिया था. प्रभात के चौथे प्रहर में जागकर गुरुमंत्र के स्मरण में लग जाते थे. साथ में यह भी स्मरण रखते थे कि गुरुदेव ने क्या-क्या शिक्षाएँ दी हैं. तपस्वी जीवन था. बहुत करके ऋषिकेश की गहन झाड़ियों में रहते थे. उस समय ऋषिकेश में अन्नक्षेत्र नहीं हुआ करते थे. स्वामी जी ऋषिकेश से भोजन के लिये प्रत्येक शनिवार को प्रायः हरिद्वार पैदल आते. हरिद्वार में रात्रि विश्राम कर रविवार अन्नक्षेत्र से भोजन लेकर वापस ऋषिकेश झाड़ियों में आते और अगले शनिवार तक प्रतिदिन एक रोटी निकालकर गंगाजल का छींटा लगाकर खाते. इस प्रकार स्वामी जी में कठोर तपवृत्ति थी.

परम पूज्य गुरुदेव के द्वारा दी गई सब शिक्षाओं को स्वामी जी ने अपने जीवन में पूरा-पूरा उतारा. जैसे-जैसे आचरण आचार्य जी महाराज करते थे वैसे ही स्वामी जी ने किये. सब कुछ होते हुए भी सादा भोजन पंगति में बैठकर करते थे, सादे कपड़े पहनते थे. रहन-सहन, चाल-चलन सब कुछ सीधा-सादा था.

छल-स्वार्थ रहित मीठी वाणी बोलते थे. जो कुछ मन में होता था, वह सत्संग में सुनाते थे. जो कुछ सुनाते थे वैसा वे स्वयं करते थे. स्वामी जी के सत्संग में किसी को भी समय का ध्यान नहीं रहता था. सब आनन्द विभोर होकर मस्ती में मग्न हो जाते थे. लेकिन स्वयं स्वामी जी समय के बड़े पाबन्द रहते थे. स्वामी जी सत्संग में कर्म, धर्म, ज्ञान, भक्ति, प्रेम आदि सभी विषय खोल-खोलकर समझाते थे. और प्रत्येक शनिवार को अपने गुरुदेव की महिमा का गान करते थे, उसी दिन उपवास व मौन व्रत भी उनके जीवन का अंग थे.

शिष्य बनने की इच्छा रखकर आने वाले लोगों में से विशेष कर माताओं, बहनों से ये पूछते थे कि आप अपने घर वाले बड़ों से आज्ञा लेकर आयी हो? अगर नहीं तो आज्ञा लेकर आओ. और यह भी पूछते थे कि आपको गुरु करने की खुद इच्छा हुई है या किसी और ने आपको कहा है? अगर कोई कहता था कि मुझे किसी ने कहा है तो स्वामी जी उसे एकांत में बुलाकर समझाते थे कि आज तुमने किसी के कहने पर मुझे गुरु बनाना चाहा है, ये विचार तो आपके अच्छे हैं, पर तुम्हारा अपना विचार नहीं है. कल फिर किसी दूसरे के कहने पर आप फिर किसी दूसरे को गुरु बना लोगे. ऐसा करने से तुम्हें सुख- शान्ति नहीं मिलेगी. इसलिये आप अपनी बुद्धि से सोच- समझकर एक निश्चय करके गुरु धारण करें. यह कोई मिठाई नहीं है जो जल्दी से खा लोगे. शिष्य बनना कोई खेल नहीं है. जो कोई भी अपने गुरु को छोड़कर दूसरा गुरु धारण करता है. वह सौ जन्म कुत्ते के पाकर फिर चाण्डाल के घर जन्म लेता है. शिष्यों को धर्म मर्यादा सिखाकर फिर शिष्य बनाते थे. वे गुरु शिष्य के गहन तत्त्व को अच्छी तरह जानते थे.

स्वामी जी के विचार महान् थे वे हर बात का गहरा अध्ययन करते थे; क्योंकि गुरुदेव ने सिखाया था-

'आदि फल विचार के तुम कर पीछे सब काम जी'

मनुष्य के बुद्धि की पराकाष्ठा भी यही है कि हर कार्य का आगा पीछा सोच-समझकर आरम्भ करे और उसे अंत तक निभाये.

आचार्य श्री सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज की तरह स्वामी जी भी किसी से कभी पैसा या कोई चीज माँगते नहीं थे, न ही इशारा करते थे. सिंध की बात है आचार्य श्री सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के ब्रह्मलोक पधारने पर स्वामी जी ने कार्यभार सम्भाला. कुछ समय के

बाद चैत्र मेले की तैयारियाँ होने लगीं. जिज्ञासु प्रेमी लोग भी आने लगे. कराची से श्री प्रभदास हिंगोरानी भी परिवार सहित आये. उस समय भण्डार कोठार की सेवा पर संत चन्दनप्रकाश जी थे. प्रभदास हिंगोरानी व उनके बच्चे पहले से ही स्वामी चन्दनप्रकाश जी से परिचित थे. बच्चे पहली बार मेले में आये थे. बच्चों का स्वभाव है देखना व पूछना. सो हिंगोरानी के बच्चे जिनमें रतन, इन्द्र, जसोदा, मोहिनी और मनू थे. वे सब स्वामी चन्दनप्रकाश जी से पूछने लगे कि मेले में जो इतने लोग आये हैं, उनके खाने के लिये जो भण्डार है, वह हमें दिखाईये. स्वामी चन्दनप्रकाश जी ने उन बच्चों को वह भण्डार दिखाया जहाँ खाने का सामान रखा था. एक बोरी चावल, १५-२० सेर आलू, एक बोरी आटा एवं मन भर प्याज था. ये भण्डार का सामान देखकर बच्चे हँसकर पूछने लगे कि इतना बड़ा मेला और सामान तो बिल्कुल नहीं है, कल ये लोग क्या खायेंगे. स्वामी चन्दनप्रकाश जी ने कहा कि मेरे पास जो था वह दिखा दिया, आगे गुरु महाराज जी जानें. बच्चे फिर अपने पिता के साथ दरबार में घूमने लगे. थोड़ी देर में एक सेवादारी दौड़ता हुआ प्रभदास जी के पास आया और कहने लगा आज रात के भोजन की व्यवस्था तो हो गयी, बाकी कल सवेरे बच्चों के लिये एक देग खिचड़ी बनेगी, इतने चावल हैं और कुछ भी नहीं है. सेवादारी सूचना देकर चला गया. इधर प्रभदास जी स्वामी जी के पास आये बच्चे भी उनके साथ थे. और भोजन के बारे में सब बात सुनाकर कहने लगे कि कल शहर के सेठ लोग जो आपके पास बैठे थे, वे सेवा के लिये आज्ञा माँग रहे थे. आप उन्हें बुलाकर मेले के लिये भोजन व्यवस्था करा लीजिये. यह सुनकर स्वामी जी बिना किसी घबराहट के प्रभदास जी से कहने लगे कि सेठों से कहने की जरूरत नहीं है. मैं अपने गुरुदेव को ही, जो सबसे बड़ा सेठ है, प्रार्थना करूँगा. मेला भी उनका है मेहमान भी उनके हैं. अगर उन्होंने मेले के लिये आज रात भर में भोजन की व्यवस्था कर दी तो ठीक है नहीं तो मैं और आप दोनों भाग चलेंगे. गुरू जाने और गुरू का मेला! ये वचन सुनकर प्रभदास जी अवाक् रह गये. फिर प्रभदास जी अपने काम में लग गये. रात होने लगी, बच्चों को तमाशा लग रहा था. वे आपस में कह रहे थे कि हम भी देखें कि कैसे स्वामी टेऊँराम जी महाराज भोजन भेजते हैं और अगर नहीं भेजा तो पिताजी और स्वामी जी कैसे और कहाँ भागते हैं. यह सोचकर सब बच्चे बाहर वाले दरवाजे पर आकर बैठ गये. रात बीतने लगी, बच्चों को नींद तो सता रही थी फिर भी तमाशा देखने के लिये जैसे तैसे करके जाग रहे थे. आधी रात को अचानक एक ट्रक शहर से आकर दरवाजे पर खड़ा हो गया और ड्राइवर **'भगत टेऊँराम- भगत टेऊँराम'** कहकर पुकारने लगा. आवाज सुनकर बच्चे ट्रक के पास दौड़ गये. और पूछने लगे कि माल किसने भेजा है? ड्राइवर कहने लगा कि 'भगत टेऊँराम' ने भेजा है, 'भगत टेऊँराम' को बुलाओ तो सामान सम्भाल ले. यह सुनकर बच्चे पिताजी के पास दौड़ गये. समाचार पाकर प्रभदास जी ने वहाँ जाकर सामान उतरवाकर भंडार में रखवा दिया. सबेरे सारा समाचार स्वामी जी को बताकर चरणों में सिर रखकर कहा कि आपकी गुरु-भक्ति धन्य है.

सन् १९६२ में जयपुर दरबार की बात है. एक प्रेमी जिसका नाम लालचंद आडवाणी था. उसे मोहनलाल भी कहते थे. अब उसका शरीर शान्त हो गया है, वह हांगकांग से अपना धन्धा बंद करके भारत आया था, पूना में उसका घर है. स्वामी जी के दर्शन के लिये वह पूना से जयपुर आया. वापिस जाते समय उसने ५८,००० (अट्ठावन हजार) रुपये का ड्राफ्ट स्वामी जी के चरणों में भेंट रखा. कागज देखकर स्वामी जी ने पूछा कि यह क्या है? लालचन्द कहने लगा- गुरुदेव! यह ५८ हजार रुपये का ड्राफ्ट है, आप इस भेंट को स्वीकार करें. यह सुनकर स्वामी जी ने कहा कि क्या आपका परिवार है? लालचन्द जी ने कहा कि हाँ, गुरुदेव! तो फिर ये रुपये ले जाइये और अपने परिवार का पालन-पोषण करिये. बहुत प्रार्थना करने पर भी स्वामी जी ने वह भेंट स्वीकार नहीं की. ऐसा था स्वामी जी का त्यागमय जीवन!

स्वामी जी सगे, धागे, रक्षा, ताबीज इत्यादि जिस किसी प्रेमी के गले या बाँह में बन्धे देखते थे, उसे तुड़वाकर कहते थे कि राम नाम का सच्चा धागा बाँधो. हस्त रेखाएँ न देखते थे और माता बहनों को कहते थे कि दूर से ही मनोमय प्रणाम करो.

स्वामी जी अपने आचार्य श्री सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज को ही अपना इष्ट मानते थे तथा भगवान से भी बढ़कर गुरुदेव की पूजा करते थे.

"बोलो गुरुभक्त सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज की जय"

सद्गुरु हरिदासराम वचनावली

परम शांति के बिना जीवन का वास्तविक सुख संभव नहीं और वह शाश्वत् सत्य और नित्य प्राप्त तत्व से ही संभव है।

आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज द्वारा सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज को नाम-दान व संन्यास की कथा-वार्ता

नाम दान

एक दिन, सुअवसर पाकर स्वामी जी और स्वामी गुरुमुखदासजी ने सत्गुरु महाराज जी से 'नाम' दान के लिये प्रार्थना की. यद्यपि सत्गुरु महाराज जी के द्वारा स्वामी जी की परीक्षाएँ ली गयी थी. फिर भी गुरु-शिष्य की परम्परा और शास्त्रों के नियमों को ध्यान में रखते हुए, उन्हें समझाते हुए कहने लगे कि-

।। भजन राग पहाड़ी ।।

सद्गुरु बोले सुन रे चेला।
साधु कहावन सुगम नहीं है, साधन काम दुहेला।। टेक ।।
सेवा सुमरण निशदिन करना, काटन बुख का वेला।
तांते समझी पाँव सु धरना, आतप शीत सहेला।। 1 ।।
लोक निंदा को सिर पर सहना, जग में चरत अभेला।
तीन लज्जा को तोड़ के चलना, भव ते रहन अकेला।। 2 ।।
पाँच विषय की आस न करनी, इन्द्रियाँ जीत रहेला।
अन्तर आतम चिन्तन करना, है यह अद्भुत खेला।। 3 ।।
कहता टेऊँ कठिन फकीरी, यह ना गैल सुहेला।
जीव ईश की कटे उपाधी, करन ब्रह्म से मेला।। 4 ।।

'नाम' (गुरु उपदेश या मन्त्र) लेकर गृहस्थ में रहना या गेरू वस्त्र पहन कर आश्रम में रहना, बहुत सरल है, परन्तु साधुत्व को प्राप्त करना बहुत कठिन है. सर्व प्रथम मन और आँखें, कान, जीभ इत्यादि पाँच ज्ञान इन्द्रियों और हाथ पाँव इत्यादि पाँच कर्म इन्द्रियों को पूर्ण रूप से नियंत्रण में रखना होगा. भूख-प्यास, सर्दी-गर्मी, यश-अपयश, मान-अपमान, हर्ष-शोक इत्यादि, द्वन्द्वों को सहर्ष सहना पड़ेगा, रात दिन सेवा और स्मरण करना पड़ेगा. कुल लज्जा, लोक लज्जा और वेद लज्जा को तोड़ना पड़ेगा. संसार, संसार के पदार्थ, संसार से सम्बन्ध, जहाँ तक संसार के नेह और नाते हैं, उन सबकी आसक्ति को त्यागना पड़ेगा, शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गंध, काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार इत्यादि विषय-विकारों को त्यागना पड़ेगा. एकान्त में रहना पड़ेगा, जीव और ईश्वर के भेद को तोड़ना पड़ेगा, रात दिन आत्मा का चिन्तन करना पड़ेगा, राग-द्वेष से अलग रहना पड़ेगा. ये सब बातें अद्भुत हैं, ब्रह्म भी अद्भुत है. उपरोक्त सभी बातों में जो कोई प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होगा, वह ही उस अद्भुत ब्रह्म का दर्शन कर सकेगा. इसलिये ही साधुओं के मार्ग को कठिन बताया गया है. असि (तलवार) की धार पर नंगे पाँव चलना कठिन है, परन्तु फकीरी (साधुपन) के मार्ग पर चलना तो उससे भी कठिन है. यह संसार जो देखा सुना जा रहा है, उसे बिल्कुल छोड़ना है, जो अदृश्य है, वहाँ पर जोड़ना है, बस्ती से बिल्कुल दूर निर्जन (उजाड़) स्थान में चलना और वहाँ रहना है. साधुओं के मार्ग में आने वाली सभी बाधाओं का सविस्तार वर्णन कर सत्गुरु महाराज जी ने तथा स्वामी गुरुमुखदास जी को सम्बोधित करते हुए कहा कि वत्स! हमने जो कुछ कहा, वह तुम दोनों ने ध्यान से सुना? यदि ध्यान से सुना है तो फिर भी ध्यान से सुनो. जिन तीन गड्ढों के विषय में श्री कृष्ण भगवान ने अपने शिष्य अर्जुन को सावधान करते हुए कहा था कि-

त्रिविधं नरकस्येदं द्वारं नाशनमात्मनः।
कामः क्रोधस्तथा लोभस्तस्मादेतत्त्रयं त्यजेत्।।

(गीता 16/21)

काम, क्रोध तथा लोभ ये तीन गहरे गड्ढे हैं, ये ही नरक के दरवाज़े हैं.

गीता के उस रहस्य को समझाते हुए सद्गुरु महाराज जी फिर कहने लगे कि इस मार्ग में कँचन,

सद्गुरु टेऊँराम अमृतोपदेश

संसार में दो प्रकार के मनुष्य होते हैं- सज्जन और दुर्जन। दोनो के स्वभाव न्यारे न्यारे होते हैं। सज्जन पुरूष सबसे गुण ग्रहण करते हैं, जबकि दुर्जन मनुष्य भले मनुष्यों से भी अवगुण ही उठाते हैं।

कामिनी तथा कीर्ति ये तीन गहरे गड्ढे हैं जो दिखाई नहीं पड़ते; क्योंकि ऊपर से सुंगधित पुष्पों से ढके रहते हैं, इन गड्ढों में ऐसा तो जादू भरा हुआ है, जो इनमें गिरा हुआ मनुष्य भी अपने को गिरा हुआ नहीं मानता. इन गड्ढों के नीचे गुप्त दरवाज़े हैं, जिनमें गिरा हुआ मनुष्य ऊपर तो नहीं आ सकता; क्योंकि जब कोई अपने को गिरा हुआ माने तब न! जब कोई अपने को गिरा हुआ ही नहीं मानता तो निकलेगा कैसे? इसलिये वह नीचे के द्वारों से सीधा नरक में चला जाता है. साधुओं का यह मार्ग सीधा नहीं, बहुत टेढ़ा है. इसलिये फिर भी विचार करो, शीघ्रता करने की आवश्यकता नहीं है. यह बच्चों का खेल नहीं है. कहीं ऐसा न हो, जो कदम आगे बढ़ाओ फिर पीछे लौटना पड़े. स्वामी जी और स्वामी गुरुमुखदासजी दोनों हाथ जोड़कर कहने लगे कि हे भगवन्! आपकी कृपा से असम्भव भी सम्भव हो सकता है. स्वामी जी और स्वामी गुरुमुखदासजी की ऐसी श्रद्धा-भावना जानकर सत्गुरु महाराज जी मुस्कराकर कहने लगे कि यदि तुम दोनों का ऐसा विश्वास है, तो भी एक वर्ष तक और प्रतीक्षा करो. फिर तुम्हें 'नाम' का दान दिया जायेगा. सत्गुरु महाराज के सन्तोष-जनक वचनों को सुनकर दोनों बहुत प्रसन्न हुए और सेवा में लग गये.

समय बीतते देर नहीं लगती. प्रसन्नता के कारण उन्हें मालूम ही नहीं हुआ कि एक वर्ष का समय कैसे बीत गया. बराबर एक वर्ष के पश्चात् सत्गुरु महाराज जी ने स्वामी जी और स्वामी गुरुमुखदासजी महाराज को बुलाकर दीक्षा (गुरु मन्त्र) देने का शुभ समय बता दिया. निश्चित समय पर पूजा की सामग्री लेकर सत्गुरु महाराजजी की सेवा में उपस्थित हुए, दोनों ने गुरु महाराज जी की विधिवत् पूजा की सत्गुरु महाराज जी ने उन दोनों को विधिवत् दीक्षा दी और दोनों का नाम बदलकर स्वामी गुरुमुखदासजी और स्वामी सर्वानन्द जी रखा. मंगलमय (शुभ) कार्य के सम्पन्न हो जाने पर दोनों ने सत्गुरु महाराज जी की परिक्रमा की और चरण स्पर्श कर आशीर्वाद लिया. आशीर्वाद देकर सत्गुरु महाराज जी ने उनको मन और इन्द्रियों पर नियंत्रण रखने की विद्या भी सिखा दी. फिर दोनों को समझाते हुए कहा कि-

खं वायुमग्निं सलिलं महीं च, ज्योतींषि सत्त्वानि दिशो द्रुमादीन्।
सरित्समुद्रांश्च हरेः शरीरः, यत् किञ्च भूतं प्रणेमादनन्यः।।
आदित्यचन्द्रावनलानिलो च, द्यौर्भूमिरापो हृदयं यमश्च।
अहश्च रात्रिश्च उषे च संध्ये, धर्मश्च जानाति नरस्य वृत्तम्।।

आकाश, वायु, अग्नि, जल, पृथ्वी, ग्रह, नक्षत्र, प्राणी, दिशाएँ, वृक्ष, वनस्पति, नदी-समुद्र, सूर्य, चन्द्र, हृदय, यम, रात-दिन, दोनों संध्याएँ और धर्म इत्यादि सब परमात्मा के छिपे हुए रूप हैं, कोई भी मनुष्य कहाँ भी, किस समय भी, किसी भी उपाय से अच्छा या बुरा कर्म करता है, तो वे ही उसके कर्मों को देखते हैं और साक्ष्य (गवाही) देते हैं. इसलिये जैसे परमात्मा सर्व व्यापक है वैसे सत्गुरु को भी सर्व व्यापक जानना. इतना समझ कर, आज्ञा पाकर दोनों सेवा में लग गये.

एक सप्ताह के पश्चात् सत्गुरु महाराज जी ने स्वामी जी को बुलाकर घर जाने की आज्ञा दी. आज्ञा पाकर स्वामी जी ने सबके चरण छुए, फिर सत्गुरु महाराज जी के दोबारा चरण स्पर्श कर आशीर्वाद लिया, और परिक्रमा देकर जाने के लिये तैयार हुए, जाते समय सत्गुरु महाराज जी ने स्वामी जी के गले में एक ऊनी शाल डालकर कहा, अच्छा तुम्हारा मार्ग शुभ हो, अब जाओ. स्वामी जी अपने गाँव पहुँच कर अपने घर आये, माता पिताजी के चरणों में प्रणाम कर आशीर्वाद लिया, फिर वहाँ का सब कुशल समाचार कह सुनाया.

इस बार अपने पुत्र (स्वामी जी) का चाल-चलन, चेहरा देखकर भक्त सेवकराम जी आश्चर्य में पड़ गये, उन्हें सुने हुए पुराने इतिहास की याद हो आयी.

पुराना इतिहास : बहुत पुराने समय की बात है. सत्यकाम नामक ऋषि बालक था, उसने अपनी माता

सद्गुरु सर्वानन्द सन्देश — जिसको गुरु कृपा का कण मिल जाता है, उसकी समस्त क्रियाएँ बदल जाती हैं।

को निवेदन कर कहा कि हे पूज्या माताजी! मैं पढ़ने के लिये गुरुकुल (विद्यालय) में जाना चाहता हूँ, मुझे बताओ कि मैं किस गोत्र (कुल) वाला हूँ? ताकि गुरुजी के द्वारा गोत्र पूछे जाने पर मैं उन्हें ठीक उत्तर दे सकूं. सत्यकाम की बात सुनकर वह कहने लगी कि तू किस गोत्र वाला है, यह मैं नहीं जानती; क्योंकि घर में बहुत अतिथि आते रहते थे, तो मैं उनकी परिचर्या (सेवा) में लगी रहती थी, बड़ों से गोत्र पूछने का ध्यान ही नहीं आया, मैंने तुम्हें युवावस्था में प्राप्त किया था, तुम्हारे जन्म के पश्चात् तेरे पिता का देहावसान (मृत्यु) हो गया, इसलिये उनसे भी पूछ न सकी. अतः मैं नहीं जानती हूँ कि किस गोत्र वाला है. मेरा नाम जाबाल है, और तेरा नाम सत्यकाम है, अतः गुरुजी के पूछने पर तुम अपने को सत्यकाम जाबाल बता देना. ऐसा सुनकर माताजी से आज्ञा लेकर सत्यकाम ने हारिद्रुमत गौतमजी के पास जाकर कहा- मैं आप पूज्य श्रीमान् के पास विद्या ग्रहण करने आया हूँ. इस पर गौतमजी ने पूछा, वत्स! तू किस गोत्र वाला है? यह सुनकर सत्यकाम ने माता जी की बात ज्यों की त्यों बतलाकर कहा कि मैं सत्यकाम जाबाल हूँ. यह सुनकर गौतमजी समझ गये कि यह ब्राह्मण बालक है; क्योंकि ब्राह्मण के सिवा कोई भी स्पष्ट बोल नहीं सकता. अतः आश्रम में आये हुए विद्यार्थी सत्यकाम का उपनयन (जनेऊ) संस्कार किया, फिर गौतमजी ने चार सौ गौएँ जो दुर्बल थीं, वे उसे देते हुए सत्यकाम को कहा कि वत्स (बेटा)! अब इनके पीछे जाओ. जब इनकी संख्या एक हजार हो जाय, तब ले आना. सत्यकाम ने भी ऐसी प्रतिज्ञा कर ली, आज्ञा पाकर सत्यकाम गौओं को लेकर एक वन में गया, जहाँ तृण (घास) और जल की अधिकता थी. वन में जाकर बड़ी सावधानी से गौओं की रक्षा करने लगा. (विद्या अध्ययन करने के लिये आये हुए विद्यार्थी को सर्वप्रथम सेवा में लगाया जाता था, इसलिये ही विद्या के साथ विद्यार्थियों में सभ्यता, मनुष्यों में मानवता, साधुओं में साधुता आती थी, यह थी भारतवासियों की पुरानी प्रथा.) गौओं के लिये तो वन में घास पानी था, पर सत्यकाम क्या खायेगा? कहाँ से भोजन लायेगा? (पाठक इस बात को भी सोच सकते हैं.)

बहुत समय तक वह गौओं के साथ रहा. जब गौओं की संख्या एक हजार हो गई तब उनमें से एक सांड (बैल) ने कहा, सत्यकाम! हम एक हजार हो गये हैं, अब हमें आचार्य के पास ले चलो.

सांड ने फिर कहा, सत्यकाम! मैं तुम्हें ब्रह्म के पाद, जो कि पूर्व, पश्चिम, उत्तर और दक्षिण इन चार कलाओं वाला प्रकाशवान् नामक पाद है, का उपदेश करता हूँ. दूसरे पाद का उपदेश तुम्हें अग्नि करेगा. ऐसा कहकर सांड चुप हो गया. दूसरे दिन रात को अग्नि ने दूसरे पाद, जो कि पृथ्वी, अन्तरिक्ष, द्युलोक और समुद्र इन चार कलाओं वाला अनन्तवान् नाम पाद है, का सत्यकाम को उपदेश देकर कहा कि तीसरे पाद का उपदेश तुम्हें हँस करेगा. ऐसा कहकर अग्नि शांत हो गया. तीसरे दिन रात को हँस ने ब्रह्म के तीसरे पाद, जो कि अग्नि, सूर्य, चन्द्रमा और विद्युत् इन चार कलाओं वाला ज्योतिष्मान् नामक पाद है, का सत्यकाम को उपदेश देकर कहा कि चौथे पाद का उपदेश तुम्हें मद्गु (जल का पक्षी) करेगा ऐसा कहकर हँस चला गया. चौथे दिन रात को मद्गु ब्रह्म के चौथे पाद, जो कि प्राण, चक्षु, श्रोत्र और मन इन चार कलाओं वाला आयतनवान् नामक पाद है, का सत्यकाम को उपदेश देकर चला गया. संकेत :- यह उपनिषदों की रहस्यमयी विद्या है और वेदों का अति गूढ़ विषय है. इसलिये इसका विशेष वर्णन उचित नहीं है.

गौओं को लेकर जब सत्यकाम आचार्य गौतम जी के पास पहुँचा, तब उसे देखकर आचार्य गौतमजी ने पूछा, सत्यकाम! तुम्हारा चेहरा ब्रह्म तेज से उद्भासित हो रहा है. कहो, तुम्हें किसने उपदेश किया है? आचार्य गौतमजी के पूछने पर सत्यकाम ने सारा समाचार कह सुनाया फिर प्रार्थना की कि हे भगवन्! मैंने आप जैसे महर्षियों से सुन रखा है कि आचार्य जी से प्राप्त की गई विद्या ही फलीभूत होती है. गुरु से भिन्न दूसरों के द्वारा दी गई विद्या निष्फल

सद्गुरु शान्तिप्रकाश अमृतवाणी

भगवान के कृतघ्न नहीं बनें। उनकी कृपा के लिए बार-बार उनके आभार मानें। उन्होंने आपको जो कुछ भी दिया है उस पर प्रसन्नचित्त होकर रहें।

हो जाती है. अतः औरों से ली गई विद्या से मेरा कोई मतलब नहीं है. आप मेरे पूज्य गुरु हैं, आप ही मुझे उपदेश देने की कृपा करें. यह सुनकर आचार्य गौतमजी ने अपने शिष्य सत्यकाम को ब्रह्मज्ञान का उपदेश किया.

कहने का मतलब तो सत्यकाम की तरह अपने पुत्र सर्वानन्द के चेहरे पर चमक देखकर पिताजी ने पूछा, सर्वानन्द! तेरे चेहरे को देखकर ऐसा मालूम होता है कि आज तुम्हें कोई अमूल्य वस्तु मिली है, तुम्हारे पास यह शाल तो है पर वह तेरी प्रसन्नता का कारण नहीं हो सकती. तुम्हें कुछ और भी मिला है. यह शाल तुझे किसने दी है? पिताजी के पूछने पर स्वामी जी ने कहा, पिताजी! इस मेले में मैंने अभूतपूर्व दृश्य देखे, सत्गुरु महाराज जी के राग में ऐसा तो अनोखा रस भरा था जिसने मेरे मन की व्याकुलता बढ़ा दी, मैं ऐसा अनुभव कर रहा था, मानो धधकती हुई आग में घी की आहुतियाँ पड़ रही है. विरह की आग दिल में भड़कने लगी, सत्गुरु महाराज का एक-एक शब्द तीर की तरह मेरी नस-नस में चुभने लगा, पिछले मेलों की अपेक्षा इस मेले में मुझे नई-नई बातों का अनुभव हुआ. सत्गुरु महाराजजी के शब्द अभी तक मेरे कानों में गूँज रहे हैं. यथा-

।। भजन राग तिलंग ।।

दिल का दाग न धोता जावे, सहसें साबुन लाया मैं।। टेक।।
दर्द लगा रांझन दा सजनी, भड़के अन्दर विरह दी अग्नी।
झंग विकार जलाया मैं।। 1 ।।
रांझन वाली नृति निराली, उलटा बोलन उलटी चाली।
उलटा भेद सु पाया मैं।। 2 ।।
रांझन वाला मस्त प्याला, पीकर होया मन मतिवाला।
अपना आप भुलाया मैं।। 3 ।।
रांझन ऊपर सदके जावां, कहे टेऊँ गुण तांके गावां।
साचा नेह लगाया मैं।। 4 ।।

ऐसा कहकर स्वामी जी कहने लगे कि पिताजी! यह शाल भी सत्गुरु महाराज जी ने आते समय मेरे गले में डाली है. परन्तु मेरी खुशी का कारण है- 'अनमोल पवित्र नाम' जो कि सत्गुरु महाराज जी ने कृपा कर मुझे दिया है. सारा समाचार सुनकर भक्त सेवकराम जी बहुत प्रसन्न हुए. फिर पिताजी की आज्ञानुसार घर सत्संग के काम काज में लग गये. साथ-साथ सत्गुरु महाराज जी के उपदेशों और आदेशों का भी नियम पूर्वक पालन करने लगे. ज्यों-ज्यों अभ्यास करने लगे त्यों-त्यों मन की शुद्धता निर्मलता भी बढ़ने लगी. अब स्वामी जी को संसार के व्यवहार से वैराग्य और घृणा होने लगी और मोह ममत्व के बन्धन टूटने लगे. घर के काम काज से अपने पुत्र को विमुख (उदासीन) होता देखकर भक्त सेवकराम जी ने उसे अपने कर्त्तव्य की याद दिलाई और अच्छी तरह से समझा कर कहा कि बेटा! मेरी आयु अब बढ़ती जा रही है, यह सारा काराबोर तुम्हें ही संभालना है. परन्तु

यत्रास्ति भोगो न च तत्र मोक्षो, यत्रास्ति मोक्षो न च तत्र भोगः।।

जहाँ संसार के भोग पदार्थ हैं, वहाँ मोक्ष नहीं टिक सकता. जहाँ वैराग्य है, वहाँ फिर संसार के भोग पदार्थ नहीं टिक सकते.

19 साल की आयु में मिला संन्यास गंगा तट पर

बात उन दिनों की है जब स्वामी सर्वानन्द जी महाराज भिट्टशाह गाँव (स्वामी सर्वानन्द जी महाराज की पावन जन्मभूमि) में पिता की सेवा जी जान लगाकर स्वामी गुरुमुखदासजी महाराज (स्वामी जी के चचेरे भाई) से मिलकर कर रहे थे. बड़े (बुद्धिमान) लोग सेवा पर बहुत प्रसन्न होते हैं. यदि उनके सामने एक तरफ धन-वैभव और दूसरी तरफ सेवा रखी जावे तो वे सेवा का ही वरण करेंगे. एक दिन भक्त सेवकराम को प्रसन्न देखकर भ्रमण पर जाने के लिये स्वामी जी ने पिताजी से आज्ञा माँगी, आज्ञा मिलने पर स्वामी गुरुमुखदास जी को साथ लेकर स्वामी जी यात्रा पर निकल पड़े. लाड़ (सिन्ध का दक्षिण भाग) की यात्रा करते हुए जोधपुर (राजस्थान) जा निकले. वहाँ से बीकानेर, मारवाड़, जयपुर इत्यादि शहरों

सद्गुरु हरिदासराम वचनावली

गलत तरीके से पैसा कमाना या दूसरों को दु:ख देकर पैसा कमाना- ये भी एक तरह की हिंसा है।

की यात्रा करते हुए तीन चार महीनों के पश्चात् लौटकर अपने गाँव आये. इस तरह स्वामी जी का समय सैर (यात्रा) और साधना में बीतने लगा.

एक दिन स्वामी जी ने रात के सत्संग में खण्डू से आये हुए एक प्रेमी से सुना कि सत्गुरु महाराज जी (अनन्तश्री विभूषित मंगलमूर्ति सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज) मण्डली सहित तीर्थ यात्रा के लिये हरिद्वार जा रहे हैं, यह शुभ समाचार सुनकर पिताजी से आज्ञा लेकर स्वामी जी खण्डू गये, वहाँ पहुँचकर सत्गुरु महाराज और घर के सभी सदस्यों से मिले, प्रणाम कर सबसे आशीर्वाद लिया. यात्रा पर ले चलने के लिये सत्गुरु महाराज जी को प्रार्थना की, सत्गुरु महाराज ने सहर्ष स्वीकृति दे दी.

कुछ दिन के पश्चात् पूरी तैयारी कर सत्गुरु महाराज जी की मण्डली सहित यात्रा के लिये खण्डू से प्रस्थान किया. उस समय सत्गुरु महाराज जी मण्डली में लगभग चालीस लोग थे. मार्ग में छोटे बड़े शहरों में पड़ाव डालते हुए श्री हरिद्वार जा पहुँचे. श्री हरिद्वार पहुँचकर सब लोग हरि की पौड़ी पर गये, वहाँ श्री गंगा माता जी के पावन दर्शन किये, ऊँचे स्वर से 'जय गंगे, जय गंगे, हर हर गंगे, हर हर गंगे' का जयघोष करते हुए सत्गुरु महाराज सहित सारी मण्डली ने श्री गंगा माता के पवित्र जल में डुबकियाँ लगायी. 'गंगा माता की जय, सत्गुरु महाराज की जय' इस भाव युक्त आवाज़ से सारा क्षेत्र गूँज उठा. स्नान के पश्चात् गंगा माता की पूजा कर पितरों को गंगा जल अर्पण किया. फिर उसके पवित्र जल को सिर पर चढ़ाया और पान किया. सत्गुरु महाराज जी के साथ सभी लोग दिव्य आनन्द का अनुभव कर रहे थे. सत्गुरु महाराज की आज्ञा से मण्डली ने श्री गंगा मैया के पावन तट पर ठहरने के लिये पड़ाव डाल दिया.

सभी लोग तीर्थयात्रा के नियमों का पालन करते थे. दिन में एक बार भोजन करते थे. मधुकरी और अन्न क्षेत्रों से भोजन लाया जाता था. ऋषिकेश, लक्ष्मण झूला, सप्तऋषि, चण्डी देवी, मनसा देवी, कनखल इत्यादि जितने भी हरिद्वार के पास वाले तीर्थ थे, कभी किसका कभी किसका दर्शन कर आते थे. सत्गुरु महाराज का भजन कीर्तन से बहुत प्रेम था. सुनने-समझने वाले हों या न हों पर सत्गुरु महाराज कीर्तन में इतना तो तल्लीन हो जाते थे जो तन मन की सुध-बुध ही भूल जाते थे, इस दुनिया से बहुत दूर राम राज में पहुँच जाते थे. उनका राग केवल राम रिझाने के लिये ही था. संसार के लोगों को रिझाने के लिये नहीं. भक्तों की बातें भगवान जानें या भक्त जाने.

उन दिनों में हरिद्वार में सन्त-साधु बहुत रहते थे. जिधर देखो उधर सन्त ही सन्त दिखाई देते थे. सभी सन्त सतत साधना में लगे रहते थे. गृहस्थी यात्री बहुत कम, न के बराबर तीर्थों पर जाते थे. वे भी छुट्टियाँ मनाने मनोरंजन या व्यापार के उद्देश्य से नहीं जाते थे, परन्तु विशेषकर बड़ी श्रद्धा से तीर्थों के दर्शन करने जाते थे. इस कारण सत्संग में मण्डली के सिवा दूसरे साधु-सन्त भी आते थे. वह दृश्य ऐसा प्रतीत होता था, मानो ऋषियों मुनियों की सभा एकत्रित हुई हो. ऐसा नयनाभिराम दुर्लभ दृश्य देखकर स्वामी जी और स्वामी गुरुमुखदास जी दोनों एक दूसरे को अपने विचार बताकर आपस में कहने लगे कि इस पावन भूमि पर और सुहावनी घड़ियों में यदि सत्गुरु महाराज जी हमें संन्यास दें तो कितना अच्छा होगा. अन्तर्यामी सत्गुरु महाराज दोनों का मनोरथ जान गये. भविष्य का विचार कर दोनों को योग्य अधिकारी समझकर हरिद्वार (मायापुरी) की पवित्र भूमि और पतित पावनी गंगा मैया के पावन तट, हर की पौड़ी पर एकादशी के उत्तम दिवस पर सत्गुरु महाराज जी ने स्वामी जी और स्वामी गुरुमुखदास जी को शास्त्रीय विधि-विधान के अनुसार संन्यास दिया. दोनों ने विधिवत् संन्यास ग्रहण कर सत्गुरु महाराज जी की पूजा और परिक्रमा की, चरणों में दण्डवत् प्रणाम कर आशीर्वाद लिया. उस समय स्वामी जी की आयु १६ वर्ष की थी.

-सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जीवन चरितामृत से उद्धृत

सद्गुरु टेऊँराम अमृतोपदेश

जो तत्ववेत्ता महात्मा हैं, वे ब्रह्म के स्वरूप है। उनकी वाणी चाहे किसी भी भाषा में हो वह वेद के समान है और जिज्ञासुओं के भ्रम संशयो को दूर कर उनका उद्धार करती है।

आचार्य श्री के परम उपासक स्वामी सर्वानन्द जी महाराज

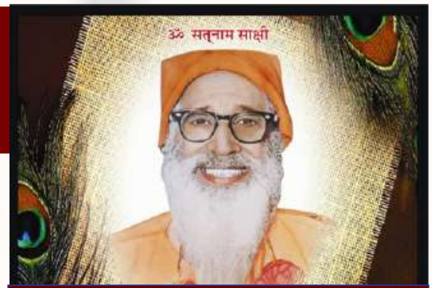

सद्गुरु सर्वानन्द जयंती विशेष

महापुरुषों की कही बातों व शिक्षाओं को लेखनी में बांधना बेहद कठिन होता है क्योंकि जो वाणी उनके श्रीमुख से निकलती है वह वेद का सूत्र बन जाती है. अगर कोई एक ही सूत्र को खोले तो एक किताब बन जाये. वह सूत्र सागर में सागर के समान होते है।

भारत देश की पावन धरा पर अनेक संतों-महापुरुषों का अवतरण हुआ है, सभी संतों-महापुरुषों ने न केवल भारत वासियों को सच्चा ज्ञान एवं सतत-कर्मों का मार्ग दिखाया है, अपितु दुनिया के समस्त समुदायों को अपनी वाणी से मंत्रमुग्ध कर दिया, जिसका परिणाम है, आज भी देश-दुनिया के समुदाय इस पावन धरा व हमारे ऋषि-मुनियों, संतों- महात्माओं की तपःभूमि को नमन करने नियम से आते रहते हैं.

इन्हीं संत-महापुरुषों की कड़ी में एक शुभाशुभ नाम आता है- त्याग तपस्या की साक्षात् मूर्ति **महर्षि योगीराज सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज** का. जो अनन्त दैवीय गुणों से परिपूर्ण थे. सच्चे गुरुभक्त स्वामी सर्वानन्द जी महाराज ने न केवल, अपने सद्गुरु महाराज, **प्रेम प्रकाश पंथ के बीजक आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज** की सेवा की वरन् उनके पावन उपदेशों की यशकीर्ति चहुँ ओर फैलाई एवं अपने सदुपदेशों से करोड़ों लोगों को सत्मार्ग की ओर अग्रसर किया.

महाराजश्री का शुभ अवतरण अविभाजित भारतवर्ष के सिन्धु प्रान्त में हैदराबाद जनपद की हाला तहसील के भिट्टशाह नामक गाँव में सम्वत् १६५४ के मंगलमय आश्विन् मास की शुक्ल चतुर्दशी (सिन्धी असू महीने की बारह तारीख), गुरु का गौरव बढ़ाने वाले पावन दिवस गुरुवार को प्रातःकाल माता ईश्वरी देवी व पिता सेवकराम के आँगन में हुआ. आपके ललाट पर अद्भुत तेज देखकर पिता सेवकराम ने ज्ञानी ब्राह्मणों को बुलवाया एवं आपके भविष्य के सम्बन्ध में पूछा. सभी वेदज्ञ पुरोहितों ने आपके तेजस्वी ललाट की दिव्य चमक देखकर भविष्यवाणी की कि **"यह बालक बड़ा होकर महान संत बनेगा"** नामकरण संस्कार उत्सव में आपका नाम (सीरू) सर्वानन्द रखा गया. सिन्ध प्रदेश के सुविख्यात संत सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज आपके मामा लगते थे, नामकरण संस्कार में वे भी सम्मिलित थे. आपने जब बालक सर्वानन्द के मस्तक पर हाथ फेरकर आशीर्वाद दिया तो बालक सर्वानन्द के चारों ओर विचित्र आभा मण्डल फैल गया, चेहरा ईश्वरीय शक्ति की दिव्य धारा से ओत प्रोत सा हो गया. माता-पिता के घर प्रतिदिन संध्याकालीन सत्संग व आरती होती थी. इससे बालक सर्वानन्द को बाल्यावस्था से ही सत्संगीय वातावरण सहज में ही प्राप्त हुआ. जैसे-जैसे आप बड़े होते गये नित्य प्रार्थना व भजन माता-पिता व संगत के साथ गाने लगे. धीरे-धीरे आपका आध्यात्मिक ज्ञान बढ़ता गया. किशोरावस्था के समय आपने संसार के मायाजाल से छुटकारा पाने का दृढ़ निश्चय ही कर लिया एवं माता-पिता की आज्ञा से **युगपुरूष संत शिरोमणि सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज** की चरण-शरण में गये. आचार्यश्री ने आपकी सेवा श्रद्धा ईश्वरीय लगन देखकर आपको शिष्य रूप में स्वीकार किया. आपने अपने सद्गुरु महाराज की सेवा सुश्रूषा एकनिष्ठ होकर श्रद्धाभाव से की. आचार्यश्री आपकी सेवा निष्ठा से बहुत प्रसन्न रहते थे. आपको संत मण्डली के साथ रटन पर भी ले जाते थे. आचार्यश्री के अमरापुर धाम गमन के बाद संत मण्डल द्वारा श्री प्रेम प्रकाश मण्डल की बागडोर आपको सौंपी गई. आपने पूर्ण

सद्गुरु सर्वानन्द सन्देश

उदारता का गुण मन पर है, धन पर नहीं,
बड़प्पन का गुण बुद्धि पर है, आयु पर नहीं।

निष्ठा से गुरु की कीर्ति को चहुं ओर फैलाया.

देश विभाजन की आशंका के चलते एक बार जब आचार्यश्री के साथ जयपुर में संत मण्डली का आगमन हुआ तो यहाँ पर स्वामी सर्वानन्द जी महाराज को अमरापुर दरबार की स्थापना के लिये गुरुदेव की रुचि संकेत हुआ. कालान्तर में देश विभाजन की त्रासदी के बाद आपके द्वारा जयपुर में आचार्यश्री के पावन मंदिर श्री अमरापुर दरबार (डिब्) की स्थापना आचार्यश्री के संकल्प को ध्यान में रखते हुए उसी स्थान पर की गई. जहाँ आज हम सब लाखों भक्तों के साथ नित्य शीश झुकाकर उस परम पावन धरा समाधि स्थल को नमन-वन्दन करके मनोरथ पाते हैं.

सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज जो शिक्षा सत्संग प्रवचनों में दिया करते थे, पहले स्वयं उस पर अमल करते थे. आपकी रहनी-सहनी बिल्कुल सादगी से भरी थी, आप अपनी ओजस्वी वाणी में फरमाते थे कि सत्संग कल्पवृक्ष के समान है, जैसे कल्पवृक्ष की पूजा करने से मनोकामनाएँ पूर्ण होती हैं, वैसे ही सत्संग से जीव को धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष चारों पदार्थ आसानी से मिल सकते हैं.

मोक्ष-ज्ञान व भक्ति विषय पर **सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज** का कथन है कि कोई भी मनुष्य चाहे वह ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ अथवा संन्यासी क्यों न हो, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र किसी भी वर्ण का क्यों न हो, वह प्रयास करे तो गुरु कृपा से आत्म ज्ञान को पाकर मोक्ष प्राप्त कर सकता है. ज्ञान व भक्ति का लक्ष्य परमात्मा है, परमात्मा का सम्बन्ध किसी जात-पात से नहीं है, जो भी सत्य धर्म का पालन करते हुए भगवान का भजन-स्तुति करेगा वह मोक्ष निश्चित पायेगा.

अपने सद्गुरु महाराज जी की दी हुई विद्या के बल पर आपने मन और इन्द्रियों को वश में रखकर शान्तचित्त रहकर, सभी दोषों से रहित होकर, परम्परा से प्राप्त गुरुमंत्र **'सत्नाम साक्षी'** और **प्रेम प्रकाश पंथ** के नियमों का ज्यों का त्यों पालन किया. आपने सदैव आचार्यश्री को ही ईश्वरीय रूप में व्यापक माना, अपने सत्संग प्रवचनों में आप कहते हैं कि ज्ञान, वैराग्य, मोक्ष आदि सब कुछ गुरुदेव की कृपा से ही मिल सकते हैं. **जो अंधकार से निकालकर प्रकाश में ले जावे, उसे 'गुरु' कहते हैं**. सत्गुरु की आज्ञाओं के अनुकूल आचरण करना ही गुरुभक्ति कहलाती है एवं 'गुरु-भक्ति' को ही 'हरि-भक्ति' कहते हैं. आपने न केवल प्रेम प्रकाश पंथ की अपितु आचार्यश्री की आभा व यशकीर्ति को चहुँ ओर फैलाया. इसी के साथ देश-विदेश के अनेक नगरों में प्रेम प्रकाश आश्रमों की स्थापना की. आपकी तपोस्थली जयपुर व हरिद्वार के भव्य आश्रमों के साथ-साथ देश दुनिया में वर्तमान में संचालित आश्रम, जो प्रेम प्रकाश पंथ की आत्मज्ञान रूपी खुशबू से सभी को आनन्दित करके उनका पथ-प्रदर्शन कर रहे हैं.

आप सदैव सत्संग करने से पूर्व जिज्ञासुओं को सावधान व मन को एकाग्र करने को प्रेरित करते थे एवं सत्संग वर्खा के उपरांत **सत्नाम साक्षी** व **साक्षी शिवोऽम्** की धुनि लगाकर सत्संग को विराम देते थे.

'यथा नाम तथा गुण' की उक्ति को अपने नाम के साथ चरितार्थ किया. **सर्व+आनन्द अर्थात् सभी को आनन्द देने वाले थे सद्गुरु सर्वानन्द !** देश विभाजन के पश्चात् आपने श्री प्रेम प्रकाश मण्डल का मुख्यालय जयपुर में **श्री अमरापुर स्थान** के नाम से स्थापित किया. यात्रा रटन के बाद आप अधिकांश समय जयपुर श्री गुरु दरबार (डिब्) व हरिद्वार आश्रम पर ही निवास करते थे. आपको गंगा मैया से विशेष लगाव था। वहां अनेक समय बैठकर भजन साधना करते थे।

भगवद् स्वरूप महायोगी आचार्यश्री सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के परम उपासक त्यागी, तपस्वी, महर्षि सद्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज के श्रीचरणों में कोटि-कोटि नमन-वन्दन!

प्रेम प्रकाशी संत मोनूराम जी,
श्री अमरापुर दरबार, जयपुर

सद्गुरु शान्तिप्रकाश अमृतवाणी — **मन में किसी वस्तु की चाह रखना ही दरिद्रता है।**

गुरु के प्रति निष्ठा एवं पक्का विश्वास

एक गुरू की शरण ली,
एक गुरू का आधार।
एक भाव से भक्ति कर, हो
गये भव से पार।।

महापुरुषों के पास अपनी निजी शक्तियाँ ही बहुत होती हैं. उनको दूसरों से सहायता की आवश्यकता नहीं पड़ती... महर्षि अगस्त्य जी बिना किसी की सहायता के अकेले ही सारे समुद्र के जल को एक ही घूँट में पी गये... अकेले कपिलदेव मुनि के दृष्टिपात से महाराजा सगर के साठ हजार पुत्र जलकर राख हो गये... ऐसी अनेक शक्तियाँ योगियों के पास होती हैं. उनके लिये दुनिया में कोई भी कार्य कठिन नहीं है. गीता के अनुसार जो योगी भगवान के भक्त हैं, वे अपनी शक्तियाँ कभी प्रकट नहीं करते हैं. उनकी शक्तियाँ दुनिया के लोगों को दिखलाने के लिये नहीं होती हैं. साधारण लोगों को आश्चर्य में डालने या उनको डराने धमकाने, अपने वश में करने के लिये नहीं होती हैं... न ही अपनी प्रभुता बढ़ाने या प्रतिष्ठा ज़माने के लिये भी महापुरुष अपनी शक्तियों का प्रयोग नहीं करते हैं.

अतः वीतराग तपस्वी सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज के अपने जीवन में जितनी भी कठिन परिस्थितियाँ आयीं पर उन्होंने अपना धर्म नहीं छोड़ा न कभी किसी के आगे हाथ फैलाया. उन्हें तो अपने **श्री गुरुदेव भगवान महायोगी सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज** के ऊपर पूर्ण दृढ़ विश्वास था. फिर भी कभी-कभी आश्रम के कार्यभार को देखते हुए थोड़े घबरा जाते थे. ऐसे ही एक समय मन ही मन सोच रहे थे.....

एक तरफ दरबार का कर्जा चुकाना था तो दूसरी तरफ गौशाला थी, सौ सवा सौ लोगों के लिये प्रतिदिन भोजन भी बनता था, दरबार के और भी सेवा कार्य चलते थे. यह सब देखकर स्वामीजी घबरा गये, सोचने लगे, ये सारे कार्य मुझसे कैसे संभाले जायेंगे. गुरू महाराज जी को मालूम थी कि किसी से भी पाई पैसा माँगना नहीं है. माँगने की इच्छा भी मन में नहीं लानी है, न किसी को सीधी या किसी के द्वारा दान देने की प्रेरणा देनी है. क्योंकि सनातन धर्म माँगना नहीं सिखाता है.

दोहा : माँगन मरन समान है, मत को माँगे भीख।
माँगन से मरना भला, यह सत्गुरु की सीख।।
रहिमन वे नर मर चुके, जो कहं माँगन जाहिं।
तिन ते पहले वे मुए, जिन मुख निकसत नाहिं।।
तुलसी कर पर कर करो, कर पर कर न करो।
जा दिन कर पर कर करो, ता दिन मरन करो।।

इस विषय पर संतों महात्माओं ने बहुत कुछ कहा है. माँगने का, भले ही कोई युग धर्म बताकर और दलीलें देकर माँगने का समर्थन करें, परन्तु संत महात्मा युग धर्म के पीछे नहीं चलते, वे तो सत्य सनातन धर्म का अनुसरण करते हैं.

दरबार के कार्य-भार के विषय में सोचते हुए स्वामी सर्वानन्द जी महाराज लेट (सो) गये और उनको नींद आ गयी. अर्धरात्रि को स्वामी जी उठे और कुटिया से बाहर निकले, इधर-उधर घूमकर फिर कुटिया में जाने लगे तो किसी ने आवाज दी- **सर्वानन्द! ओ! सर्वानन्द.........** आवाज पहचान कर स्वामी जी उधर गये जहाँ से आवाज आयी थी.... कंडी नामक पेड़, जिसके नीचे **परम पूज्य श्री गुरुदेव भगवान सद्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज** पहले पहले आकर बैठे थे. वहाँ पहुँचकर आश्चर्य में पड़ गये, क्या देखा! गुरू महाराज जी खड़े हैं, लाठी हाथ में है और मुस्करा रहे हैं. स्वामी जी पहले डर गये, पर फिर संभल कर चरणों में साष्टाँग दण्डवत् प्रणाम किया. प्रणाम कर ज्योंही खड़े हुए तो अपने को कुटिया में सोया हुआ अनुभव किया. फिर वही आवाज आयी- सर्वानन्द! क्या सोच रहे हो, चिन्ता छोड़कर सेवा में लग जाओ. आप किसी बात की चिन्ता न करें.... आवाज सुनकर स्वामी जी सहसा जाग पड़े, उठकर बत्ती जलायी, देखा तो कुटिया का दरवाजा अन्दर से बंद है, अभी-अभी तो मैं बाहर निकला था, जो कुछ देखा या सुना वह स्वप्न था, या प्रत्यक्ष था. इस प्रकार स्वामी जी को कई बार गुरू महाराज जी के दर्शन हुए. तब से स्वामी सर्वानन्द जी महाराज कहा करते थे कि गुरुदेव भगवान लाठी लेकर पूरे दरबार साहब में घूम रहे हैं, हम सबकी देखभाल कर रहे हैं. अब हमें कोई चिन्ता नहीं है. तब से स्वामी जी शोक, मोह, भय, भ्रम से रहित होकर सेवा में लग गये. इसी प्रकार स्वामी जी ने गुरू महाराज जी के कई बार दर्शन किये थे.

प्रेम प्रकाशी संत मोनूराम जी, श्री अमरापुर दरबार, जयपुर

सद्गुरु हरिदासराम वचनावली

जब हम अपना मन और बुद्धि दोनों ही गुरु को अर्पित करेंगे तब ही हमें गुरु का सच्चा आशीर्वाद मिलेगा।

सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द महिमा भजन

टेक : कुदरत का देखो चमत्कार हो गया,
सारे जगत में जै जै कार हो गया।
सत्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी का,
धरती पे आज अवतार हो गया।।

1. आई सुहानी देखो आज ये घड़ी,
बरसे गगन से सुमन की लड़ी।
सारा चमन गुलजार हो गया,
धरती पे आज अवतार हो गया।।

2. ईश्वरी माता के है भाग्य का कमाल,
सेवकराम जी भी हो गये निहाल।
चन्दा का सबको दीदार हो गया,
धरती पे आज अवतार हो गया।।

3. खुशियों से झूमे सारा भिट्टशाह गाम,
जन्में अवध में जैसे कौशल्या के राम।
घर-घर आनन्द का संचार हो गया,
धरती पे आज अवतार हो गया।।

4. झूले में झूल रहे स्वामी सर्वानन्द,
जैसे यशोदा ग्रह झूले ब्रज चंद।
निर्गुण ब्रह्म साकार हो गया,
धरती पे आज अवतार हो गया।।

5. दर्शन देने आये स्वामी टेऊँराम,
गोदी में लेके मुख चूमा सुख धाम।
आँखों-आँखों में इकरार हो गया,
धरती पे आज अवतार हो गया।।

6. आया अनोखा दिन आज बेमिसाल,
सत्गुरु को आये हुए 129 साल।
गद्-गद् सारा संसार हो गया,
धरती पे आज अवतार हो गया।।

–स्वामी मनोहरप्रकाश जी महाराज,
श्री अमरापुर दरबार, जयपुर

महर्षि सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज का 129वाँ जन्म महोत्सव

बुधवार 01 अक्टूबर से रविवार 05 अक्टूबर 2025 तक

श्री अमरापुर स्थान, जयपुर सहित
समस्त प्रेम प्रकाश आश्रमों में मनाया जायेगा.

(नोट : हरिद्वार मेला इस साल नहीं होगा.)

सद्गुरु टेऊँराम अमृतोपदेश जिन महापुरूषों की वाणी वेद के समान है, उनकी सेवा करनी चाहिए। जब वे महात्मा सेवा करने पर प्रसन्न हो जाते हैं तब जिज्ञासु को आत्मज्ञान देकर अमर बनाते हैं।

सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द महिमा

।। भजन ।।

तर्ज : देख तेरे संसार की हालत......
थल : सत्गुर सर्वानन्द स्वामी आये धर अवतार
जग में होई जय जयकार।
सिंध देश भिट्टशाह पधारे, दीनबंधू दातार, जग में....।।
1. पिता सेवकराम संतन सेवीं, माता जिनकीं ईश्वरीं देवीं।
तिस घर आये सत्गुर मेरे, करने जग उद्धार, जग में....।।
2. बालापन में बन बैरागी, हरिदर्शन की इच्छा जागी
शुकदेव जैसे त्यागी बनकर, छोड़ चले घरबार, जग में....।।
3. गुरु सेवा में अपना जीवन, भक्ति भाव से किया समर्पण।
गुरु भक्ती के पथ पर चलकर, हुआ साक्षात्कार।।
4. दास 'दिलीप' ये महिमा गाए, गाकर अपने भाग बनाये।
ऐसे सत्गुरु के चरनों पर, बार बार बलिहार, जग में....।।

अवतरण

जन्म जयंती आ गई है, सत्गुरु सच्चिदानंद की।
महिमावंत महर्षि, श्री सत्गुरु सर्वानन्द की।।
आज घड़ी है सबसे पावन, धरा धाम पै हुआ आगमन।
शुभ घड़ियाँ हैं, सबसे बड़े आनन्द की, महिमावंत....।।
श्री चरणों में सादर वंदन, प्रगट भए हैं ईश्वरी नंदन।
मूरत है ये वो ही, मुरली मुकुंद की, महिमावंत....।।
भाग्यशाली भिट्टशाह की भूमी, करते हैं सब उसे नमामी।
जन्मभूमि ये पावन, आनन्दकंद की, महिमावंत....।।
सुनिये सारे माई-भाई, जन्म जयंती की बधाई।
श्री चरणों में सादर दण्डवत् दिलीपानंद की, महिमावंत....।।

महिमा कवित्त

आज है पावन दिन, दिया गुरु ने दर्शन।
प्रसन्न हुआ तन मन, बात ये आनन्द की।।
झाँकी जाँकी है न्यारी, शोभा सिंधु सुखकारी।
जाऊँ मैं बलिहारी, श्रीचरणार्विन्द की।।
सुनो सब माई-भाई, सुंदर शुभ घड़ी आई।
जयंती है सुखदाई, सत्गुरु सर्वानन्द की।।

महिमा दोहे

सिंध देश भिट्टशाह में, आये धर अवतार।
सत्गुरु सर्वानन्द को, वन्दन बारम्बार।।
माता जिनकी ईश्वरी, पिता हैं शेवकराम।
पूर्व पुण्य से पाइया, सत्गुरु टेऊँराम।।
सर्वानन्द गुरुदेव की, महिमा अपरम्पार।
जो जन आये शरण में, भव से उतरे पार।।
सर्वानन्द गुरुदेव के, चरण कमल बलिहार।
भूले भटके जीवों का, करन आये उद्धार।।

–संत दिलीपलाल, प्रेम प्रकाश आश्रम, धुलिया

।। भजन ।।

मंदिर मेरे सतगुरां दा, बड़ा ही कमाल बणिया
बाहरों सोहणा, ते अन्दरों विशाल बणिया, मंदिर मेरे....
1. सतनाम साक्षी वेख के दूरों, राही वी रुक जांदे
बड़ी शरधा दे नाल वह प्यारे, आके शीश झुकांदे,
मंदिर मेरे सतगुरां दा....
2. मंदिर दे विच आ के देखो, बैठे सतगुरु दानी
दोनों हत्थां लुटाई जावे, ऐदी रमज किसे ना जानी
मंदिर मेरे सतगुरां दा....
3. सत्गुरु दे चरनां दी रजु, जेहड़ा मस्तक ते लगावे
कई जनमां दे, अपने प्यारे सुते भाग्य जगावे
मंदिर मेरे सतगुरां दा....
4. सोंहम मन्त्र गुरां दा जो वी, सच्चे मन से ध्यावे
जन्म मरण दे चकर से वह, सदा मुक्त हो जावे
मंदिर मेरे सतगुरां दा....

–गुरदास सचेदवा, प्रेम प्रकाश मंदिर, राजपुरा (पंजाब)

सद्गुरु सर्वानन्द सन्देश

संसार भी एक भूल भुलैया है। इसमें सत्त्व, रज और तम इन गुणों से उत्पन्न होने वाली वृत्तियाँ, जो बहुत घुमाव-फिराव वाली गलियाँ हैं।

शारदीय नवरात्र (आश्विन शुक्ल प्रतिपदा से नवमी तक) व्रत–विधान

आश्विन् शुक्ल की प्रतिपदा से नवमी तिथि तक नवरात्र व्रत होता है. नवरात्रा मुख्यरूप से दो होते हैं- वासन्तिक और शारदीय. वासन्तिक में विष्णु की उपासना का प्राधान्य रहता है और शारदीय में शक्ति की उपासना का. वस्तुतः दोनों मुख्य एवं व्यापक हैं और दोनों की उपासना उचित है. आस्तिक जनता दोनों की उपासना करती है. इस उपासना में वर्ण, जाति का वैशिष्ट्य अपेक्षित नहीं है अतः सभी वर्ण एवं जाति के लोग अपने इष्टदेव की उपासना करते हैं. देवी की उपासना व्यापक है.

दुर्गापूजक प्रतिपदा से नवमी तक व्रत करते हैं. कुछ लोग अन्न त्याग देते हैं. कुछ एकभुक्त रहकर शक्ति-उपासना करते हैं. कुछ 'श्रीदुर्गासप्तशती' का सकाम या निष्काम भाव से पाठ करते हैं. संयत रहकर पाठ करना आवश्यक है, अतः यम-नियम का पालन करते हुए भगवती दुर्गा का आराधन या पाठ करना चाहिये. नवरात्र व्रत का अनुष्ठान करने वाले जितने संयत, नियमित, अन्तर्बाह्य शुद्ध रहेंगे उतनी ही मात्रा में उन्हें सफलता मिलेगी-यह निःसंदिग्ध है.

प्रतिपदा से नवरात्र प्रारम्भ होता है. अमावस्यायुक्त प्रतिपदा ठीक नहीं मानी जाती. नौ रात्रियों तक व्रत करने से यह 'नवरात्र व्रत' पूर्ण होता है. तिथि की ह्रास-वृद्धि से इसमें न्यूनाधिकता नहीं होती. प्रारम्भ करते समय यदि चित्रा और वैधृतियोग हो तो उसकी समाप्ति होने के बाद व्रत प्रारम्भ करना चाहिये. परंतु देवी का आवाहन, स्थापन और विसर्जन- ये तीनों प्रातःकाल में होने चाहिये. अतः यदि चित्रा, वैधृति अधिक समय तक हों तो उसी दिन अभिजित् मुहूर्त (दिन के आठवें मुहूर्त यानी दोपहर के एक घड़ी पहले से एक घड़ी बाद के समय)- में आरम्भ करना चाहिये.

आरम्भिक कर्तव्य : आरम्भ में पवित्र स्थान की मिट्टी से वेदी बनाकर उसमें जौ, गेहूँ बोये. फिर उनके ऊपर अपनी शक्ति के अनुसार बनवाये गये सोने, ताँबे आदि अथवा मिट्टी के कलश को विधिपूर्वक स्थापित करे. कलश के ऊपर सोना, चाँदी, ताँबा, मृत्तिका, पाषाण अथवा चित्रमयी मूर्ति की प्रतिष्ठा करे. मूर्ति यदि कच्ची मिट्टी, कागज या सिन्दूर आदि से बनी हो और स्नानादि से उसमें विकृति होने की आशंका हो तो उसके ऊपर शीशा लगा दे. मूर्ति न हो तो कलश के पीछे स्वास्तिक और उसके दोनों पार्श्वों में त्रिशूल बनाकर दुर्गाजी का चित्र, पुस्तक तथा शालग्राम को विराजित कर विष्णु का पूजन करे. पूजन सात्त्विक हो, राजस और तामस नहीं. नवरात्र व्रत के आरम्भ में स्वस्तिवाचन-शान्तिपाठ करके संकल्प करे और तब सर्वप्रथम गणपति की पूजा कर मातृका, लोकपाल, नवग्रह एवं वरुण का सविधि पूजन करे. फिर प्रधानमूर्ति का षोडशोपचार पूजन करना चाहिये. अपने इष्टदेव-राम, कृष्ण, लक्ष्मी-नारायण या भगवती दुर्गादेवी आदि की मूर्ति ही प्रधानमूर्ति कही जाती है. पूजन वेद- विधि या सम्प्रदाय-निर्दिष्ट विधि से होना चाहिये. माँ दुर्गादेवी की आराधना-अनुष्ठान में महाकाली, महालक्ष्मी और महासरस्वती का पूजन तथा मार्कण्डेय पुराणान्तर्गत निहित 'श्री दुर्गा सप्तशती' का पाठ मुख्य अनुष्ठेय कर्तव्य है.

पाठविधि : **'श्री दुर्गा सप्तशती'** पुस्तक का-

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्।।

इस मन्त्र से पंचोपचार पूजन कर यथाविधि पाठ करे.

कुमारी-पूजन : देवीव्रत में कुमारी-पूजन परम आवश्यक माना गया है. सामर्थ्य हो तो नवरात्रभर प्रतिदिन, अन्यथा समाप्ति के दिन नौ कुमारियों के चरण धोकर उन्हें देवीरूप मानकर गन्ध-पुष्पादि से अर्चन कर आदर के साथ यथारुचि मिष्ठान्न भोजन कराना चाहिये एवं वस्त्रादि से सत्कृत करना चाहिये. शास्त्रों में आया है कि एक कन्या की पूजा से ऐश्वर्य की, दो की पूजा से भोग और मोक्ष की, तीन की अर्चना से धर्म, अर्थ, काम-त्रिवर्ग की, चार की अर्चना से राज्यपद की, पाँच की पूजा से विद्या की, छः की पूजा से षट्कर्मसिद्धि की, सात की पूजा से राज्य की, आठ की अर्चा से सम्पदा की और नौ कुमारी कन्याओं की पूजा से पृथ्वी के प्रभुत्व की प्राप्ति होती है. कुमारी-पूजन में दस वर्ष तक की कन्याओं का अर्चन विहित है. दस वर्ष से ऊपर की कन्या का कुमारी-पूजन में वर्जन किया गया है. दो वर्ष की कन्या कुमारी, तीन वर्ष की त्रिमूर्तिनी, चार वर्ष की कल्याणी, पाँच वर्ष की रोहिणी, छः वर्ष की काली, सात वर्ष की चण्डिका, आठ की शाम्भवी, नौ वर्ष की दुर्गा और दस की सुभद्रा-स्वरूपा होती है.

दुर्गा-पूजा में प्रतिदिन का वैशिष्ट्य रहना चाहिये. प्रतिपदा को केशसंस्कारक द्रव्य-आँवला, सुगन्धित तेल आदि केश-प्रसाधन संभार, द्वितीय को बाल बाँधने-गूँथने वाले रेशमी सूत, फीते आदि, तृतीया को सिन्दूर और दर्पण आदि, चतुर्थी को मधुपर्क, तिलक और नेत्राँजन, पंचमी को अंगराग-चंदनादि एवं आभूषण, षष्ठी को पुष्प तथा पुष्पमालादि समर्पित करे. सप्तमी को ग्रहमध्यपूजा, अष्टमी को उपवासपूर्वक पूजन, नवमी को महापूजा और कुमारी पूजा कर दक्षिणा दे एवं आरती के बाद विसर्जन करे. श्रावण-नक्षत्र में विसर्जनांग-पूजन प्रशस्त कहा गया है. दशमांश हवन, तर्पण, मार्जन और ब्राह्मण-भोजन कराकर व्रत की समाप्ति करे.

(संकलित)

सद्गुरु शान्तिप्रकाश अमृतवाणी सत्संग मुक्ति का द्वार है। इसलिए प्रतिदिन कुछ समय बचाकर सत्संग में जायें।

भगवान श्री झूलेलाल साईं जी का संक्षिप्त जीवन परिचय

23 सितम्बर 2025 'असूचंड' पर विशेष

नाम :- भगवान श्री झूलेलाल (उडेरोलाल/अमरलाल)

जन्म :- सम्वत् 1007 चैत्र शुक्ला द्वितीया

ईस्वी सन् :- 950

दिन :- शुक्रवार (थारूं) - जुम्मो

तिथि :- चन्द्र दर्शन (चण्ड) चेटीचण्ड

अवतरण पर नाम :- उडेरोलाल

नामकरण संस्कार छठी पर नाम :- उदय चन्द

पिताश्री का नाम :- भक्त रतन राय

माता श्री का नाम :- माता देवकी

जन्म स्थान :- नसरपुर

जन्म का समय :- सांयकाल संध्या

गुरु दीक्षा/ श्री गुरुदेव :- श्री गुरु गोरखनाथ जी महाराज

विद्या अध्ययन :- 5 से 8 वर्ष की आयु तक...

वेदों का अध्ययन :- 8 से 10 तक..

उपनयन संस्कार (जनेऊ) :- 8 वर्ष में हुआ....

अवतार लेने का उद्देश्य :- सनातन हिंदू धर्म की रक्षा करना.

भगवान श्री झूलेलाल जी के अनेक नाम :- उडेरोलाल , उदय चन्द, ज़िंदह पीर, अमर लाल...

धराधाम पर कितने वर्ष लीला की :- मात्र 13 वर्ष 6 महिने तक अनेक लीलाऐं कीं....

अंर्तध्यान दिवस :- सम्वत् 1020, भाद्रपद शुक्ल चतुर्दशी अर्थात अनन्त चतुर्दशी, सांय संध्या काल, ईस्वी सन्-963)

समाधि स्थल उडेरो लाल आस्थान :- उडेरो लाल रेल्वे स्टेशन के पास एक ही स्थान पर एक ओर अखंड ज्योति मन्दिर दूसरी ओर तुरबत

भगवान श्री झूलेलाल जी के प्रमुख उत्सव एवं दिवस :-
1-प्रति शुक्रवार- साप्ताहिक अवतरण दिवस,
2-प्रतिमाह चंद्र दर्शन- मासिक अवतरण दिवस,
3-वार्षिक चेटीचण्ड- महापर्व जयंती महोत्सव
4-असूचण्ड- एकता दिवस पर्व,
5-अनंत चतुर्दशी- अंर्तध्यान दिवस तथा
6-मनोकामना पूर्ण व्रत- चालीहा साहब....

भगवान श्री झूलेलाल जी के मूल मंत्र :-

ॐ श्री वरूणाय नमः, ॐ श्री उदय चन्द्राय नमः , ॐ श्री ज्योति स्वरूपाय नमः , ॐ श्री अमरलालय नमः....

साप्ताहिक जन्म दिवस :- शुक्रवार (थारूं)

मासिक जन्म दिवस :- चन्द्र दर्शन (चण्ड)

पंथ स्थापना :-दरिया पंथ (जल की सेवा करना तथा ज्योति का ध्यान करना)

मुख्य पूजा-पाठ :- जल की पूजा, ज्योति का ध्यान व बहराणा साहब...

पलउ :- पलउ जे पाईनि- तिनि जा खांविन्द खाली न करीं. ....

पंजिड़ा :- उतर डा़हुं उथी आयो ,
मुंहिंजो सुहिणो सांवलु शाहु....

आरती :- 1. गावे गावे परम पद पावे ,
अमर जिंदा तेरी आरती....

2. ओम जय दूलह देवा....

प्रेम प्रकाशी संत मोनूराम जी,
श्री अमरापुर दरबार, जयपुर

सद्गुरु हरिदासराम वचनावली

सात्विक, राजस और तामस तीन प्रकार की इच्छाएँ मन में उत्पन्न होती हैं। इन तीनों का त्याग करना है। इनमें से कोई भी इच्छा मन में रह गई तब तक शान्ति प्राप्त होने वाली नहीं।

भक्त पुण्डरीक की कथा

प्रभास में भगवान् विराजमान हैं. उस समय दक्षिण भारत में चन्द्रभागा नदी के किनारे पुण्डरीक नाम का महान् भगवद्भक्त हुआ है. माता-पिता की सेवा करता है, स्मरण श्रीकृष्ण का करता है. माता-पिता में उसने भगवान् की भावना रखी है, मेरी माँ भगवान् है, मेरे पिता भगवान् हैं. माता-पिता की वृद्धावस्था है, अनेक रोग हुए हैं. अतिशय गरीब है. छोटी-सी झोंपड़ी में रहता है. दिन भर माता-पिता की सेवा करता है. भिक्षा माँगने के लिए जाता है. रसोई बना करके माता-पिता को खिलाता है.

उसको द्वारका जाने की इच्छा थी- मुझे एक बार द्वारकानाथ के दर्शन करना है. माता-पिता की सेवा छोड़ करके वह नहीं जा सका. सतत सेवा और स्मरण करने से उसका मन शुद्ध हुआ था. पवित्र मन में एक दिन ऐसा विचार आया कि मैं तो द्वारका में नहीं जा सकता, क्या द्वारकानाथ श्री रुक्मिणीजी को साथ लेकर के मेरे घर में नहीं आ सकते हैं?

वैष्णवों का प्रेम भगवान् का आकर्षण करता है. उसका प्रेम बहुत बढ़ गया था. भगवान् ने द्वारका-लीला का उपसंहार किया और द्वारकानाथ श्री रुक्मिणीजी के साथ दक्षिण भारत में चन्द्रभागा नदी के किनारे पुण्डरीक के घर में आये हैं. चौदहों भुवन के नाथ उनके आँगन में आये हैं.

मेरे घर भगवान् आये हैं! उसकी बहुत इच्छा थी कि श्री रुक्मिणी-द्वारकानाथजी की मैं पूजा करूँ. आज श्री रुक्मिणीजी के साथ द्वारकानाथ उसके घर में आये हैं, नाचने लगा है. भगवान् का वन्दन करके कहा है- मैं बहुत दरिद्री ब्राह्मण हूँ. छोटी-सी झोंपड़ी है. एक और माँ की गादी है, पिता की गादी है, अन्दर जगह नहीं है. भगवान् को और रुक्मिणी माता को पुण्डरीक ने ईंट दी है और कहा है- इसके ऊपर आप विराजें.

उसकी माता-पिता की भक्ति देख करके भगवान् प्रसन्न हुए हैं- तुम अपने माता-पिता की सेवा करो, फिर मेरी सेवा करना. पुण्डरीक माता-पिता की सेवा करने के लिये जाता है.रुक्मिणी-द्वारकानाथ वहाँ ईंट के ऊपर विराजमान हैं. पुण्डरीक माँ की सेवा करने के बाद पिताजी की सेवा करता है. उसको आने में विलम्ब हुआ है. मालिक का श्रीअंग अति कोमल है. प्रभु को परिश्रम हुआ, भगवान् ने दो हाथ कमर में रखे हैं. भगवान् तो आनंदमय हैं, भगवान् को क्या दुःख हो सकता है.

भगवान् ने जगत् को बोध दिया है, संसार-सागर इतना ही गहरा है-

प्रमाणं भवाब्धेरिदं मामकानां नितम्बः कराभ्यां धृतो येन तस्मात्।
विधातुर्वसत्यै धृतो नाभिकोशः परब्रह्मलिंगं भजे पाण्डुरंगम्।।

आज भी भगवान् प्रत्यक्ष विराजमान हैं- मैं गया नहीं हूँ, मैं आपके लिये यहाँ खड़ा हूँ. जीव मेरा है, भगवान् जीव की प्रतीक्षा करते हैं. मेरा जीव मेरे पास में आये, मैं खड़ा हूँ, आपकी प्रतीक्षा करता हूँ.

संसार-समुद्र में बड़े-बड़े डूब गये हैं. जगत् को शिक्षण दिया है, कमर में हाथ रख करके बताया है- जो भगवान् के चरण का आश्रय करता है, जो जीव भगवान् का हो जाता है, भगवान् के सेवा-स्मरण में तन्मय होता है, उसके लिये संसार-सागर इतना ही गहरा है. कमर तक जल में कोई डूब नहीं सकता है. जगत् को समझाया है- घबराना नहीं, मैं गया नहीं हूँ, मैं आपकी प्रतीक्षा करता हुआ खड़ा हूँ. मेरे पास आओ.

भगवान् आज भी प्रत्यक्ष विराजमान हैं. भगवान् भागवत में विराजमान हैं, भगवान् सन्तों के हृदय में विराजमान हैं. द्वारका में विराजमान हैं, वहीं द्वारकानाथ पण्डरपुर में विराजते हैं, कमर में दो हाथ रखे हैं. द्वारकानाथ ही विट्ठलनाथ हैं. आज भी प्रत्यक्ष विराजमान हैं.

–साधक, श्री अमरापुर दरबार (डिब), जयपुर

सद्गुरु टेऊँराम अमृतोपदेश

साक्षी चेतन परमात्मा सब में एक ही है। इसलिए किसी का भी बुरा नहीं सोचना चाहिए। बल्कि जो आप की बुराई सोचे या करे, उसके साथ भी भलाई ही करनी चाहिए।

गुरु वचनों का करें आदर

प्रातः स्मरणीय मंगलमूर्ति परम पूजनीय सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज १६ शिक्षाओं के माध्यम से हमारे चक्षु खोलने के उद्देश्य से कहते हैं कि अपने गुरु पर सदैव पूर्ण विश्वास रखो. उनकी कही हर बात को मानो. कभी भी अपने गुरु महाराज की कही बात को ग़लत मत समझना.

वेद गुरु के वचन पर नित, तुम करो विश्वास जी।
अटल श्रद्धा धार मन में, भ्रम कर सब नास जी।।

हो सकता है, जब गुरु महाराज जी कोई बात हमें कह रहे हों और वह बात उस समय हमें अच्छी न लगे; क्योंकि जिस उद्देश्य के लिए यह बात कही जा रही हो, उस उद्देश्य को हम समझ ही नहीं पा रहे हों. अतः अपने गुरु महाराज पर अपार श्रद्धा होनी चाहिए. गुरु महाराज सदैव अपने शिष्य की केवल भलाई ही चाहते हैं. हमारी भलाई, न केवल इस लोक में, परंतु परलोक में भी देखते हैं. हमारे गुरु महाराज के पास वह दृष्टि है जिससे वह हमारा परलोक भी देख सकते हैं. चूँकि हम केवल अपना वर्तमान ही देख पाते हैं, इसलिए हमारे निर्णयों का परिणाम हम केवल हमारी चाहना के अनुसार ही देखना चाहते हैं. हालाँकि, हो सकता है, हमारे द्वारा लिये गए किसी निर्णय का परिणाम अभी अच्छा न आए और भविष्य के गर्भ में उसका और भी अच्छा परिणाम छिपा हो जो कि हमें अभी नहीं दिख रहा हो. इसे केवल हमारे गुरु महाराज ही समझ सकते हैं. इसलिए गुरु महाराज के प्रति भ्रम बिल्कुल नहीं होना चाहिए. दूसरे, हम जब भी कोई कार्य करने को जाते हैं तो हमारा साक्षी (अंतर्मन) हमें सही मार्ग पर चलने की सदैव सलाह देता है. परंतु, कई बार यह भी देखा गया है कि हम अपने साक्षी की ओर ध्यान न देकर ग़लत कार्य करने की ओर चल पड़ते हैं. आगे दी गई बोधकथा से इस बात को समझाने का प्रयास किया गया है.

५० घरों के एक छोटे-से गाँव में एक अमीर व्यक्ति जिसे सभी लोग चौधरी जी कहते थे, रहता था. उनके पास एक सफ़ेद रंग का घोड़ा था. उसी गाँव में एक ग़रीब व्यक्ति भी रहता था, जिसके पास भी एक घोड़ा था जो काले रंग का था. उस निर्धन व्यक्ति का काले रंग का घोड़ा सफ़ेद रंग के घोड़े से ज्यादा तेज़ गति से दौड़ता था. अतः जब भी गाँव के लोग घोड़ों के सम्बन्ध में बात करते थे तो यह कहना नहीं भूलते थे कि काला घोड़ा, सफ़ेद घोड़े से तेज़ दौड़ता है. यह बात हमेशा ही उस अमीर व्यक्ति को बुरी लगती थी और उसको लगता था कि इस प्रकार की बातें गाँव में उसकी प्रतिष्ठा को प्रभावित करती हैं. एक दिन उसने उस ग़रीब व्यक्ति को अपने घर बुलाया और कहा कि क्यों न हम दोनों अपने घोड़ों की दौड़ करा लें जिससे यह सिद्ध हो जायेगा कि किसके घोड़े में ज़्यादा विशेषताएँ हैं. ग़रीब व्यक्ति, चौधरी साहब की बात को मान गया और दूसरे दिन ही इस दौड़ का आयोजन निश्चित कर लिया गया.

अगले दिन, निश्चित समय पर, आयोजन स्थल पर घोड़ों की दौड़ प्रतियोगिता देखने के लिए गाँव के सभी लोग एकत्रित हुए. चौधरी साहब एवं वह निर्धन व्यक्ति अपने-अपने घोड़ों पर सवार हुए और दौड़ प्रारम्भ हुई. दौड़ के अंतिम पड़ाव में चौधरी साहब का घोड़ा कुछ पिछड़ने लगा, जो कि चौधरी साहब को नागवार गुज़रा; क्योंकि वो किसी भी क़ीमत पर घोड़ों की दौड़ प्रतियोगिता में हारना नहीं चाहता था. अतः उसने अपने बल का प्रयोग कर दौड़ को जीतना चाहा. जैसे ही चौधरी साहब ने बल प्रयोग करने का सोचा, उनके अंतर्मन से एक

सद्गुरु सर्वानन्द सन्देश

काल की गति बहुत धीमी है, पर उसका शब्द इतना बड़ा भारी है, जो बहुत दूर-दूर तक सुनने में आता है। इतना होने पर भी सब लोग उसको सुन नहीं सकते हैं।

आवाज़ आई कि यह एक ग़लत कार्य होगा. परंतु, उसने अपने साक्षी (अंतर्मन की आवाज़) पर ध्यान नहीं दिया एवं उस ग़रीब व्यक्ति को आदेश देते हुए कहा कि अपने घोड़े को मेरे घोड़े के पीछे रखो ताकि यह प्रतियोगिता मैं जीत सकूँ. उस ग़रीब व्यक्ति ने यह न चाहते हुए भी अपने घोड़े को चौधरी साहब के घोड़े के पीछे कर दिया. फिर चौधरी साहब से अनुमति लेकर उसने चौधरी जी को कहा कि मैं आपका अभिप्राय समझ गया हूँ- आप इस प्रतियोगिता को बलपूर्वक जीतना चाह रहे हैं, जो कि अनैतिक कार्य होगा. गाँव के सभी लोग जिन्हें इस बात का पता नहीं होगा, वह आपको ही जीता हुआ समझेंगे एवं आपके गुणगान करेंगे. परंतु, आपके अंदर का साक्षी, जो सर्वव्यापी एवं सर्वशक्तिमान है, वो जानता है कि यह प्रतियोगिता आपने ग़लत तरीके अपनाकर ही जीती है. उस साक्षी को आप क्या जवाब देंगे? आप अपने साक्षी से पूछें कि वास्तव में इस प्रतियोगिता में विजेता कौन है? आपका साक्षी आपको सही उत्तर देगा. उस ग़रीब व्यक्ति की यह बात सुनकर चौधरी साहब को बहुत शर्मिंदगी हुई. अपनी ग़लती का अहसास कर चौधरी साहब ने मन ही मन सोचा कि, इस व्यक्ति ने जो बात कही है, वह एकदम सत्य है, वास्तव में विजयी तो यही व्यक्ति है.

इस प्रकार, हर व्यक्ति के अंदर साक्षी विराजमान है एवं जब भी हम कोई ग़लत काम करने जाते हैं हमारा साक्षी हमें अंदर से आवाज़ देता है कि यह ग़लत काम करने जा रहे हो, इसे मत करो. परंतु, यदि हम उस समय अपने साक्षी की आवाज़ को भी नज़रअंदाज़ कर देते हैं तो वह बुरा काम हमसे हो ही जाता है. अतः गुरु महाराज जी कहते हैं कि अपने साक्षी की आवाज़ को ध्यान से सुनो एवं किसी भी प्रकार का बुरा काम नहीं करो.

श्री प्रेम प्रकाश मण्डल के हाजरांहजूर सद्गुरु स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज भी अपनी अमृतमयी वाणी में बार-बार हम लोगों को समझाइश दे रहे हैं कि किसी का बुरा करना तो दूर, किसी का बुरा भी नहीं सोचो. सदैव अपने गुरु महाराज के कहे वचनों पर चलो. कभी भी मन में यह विचार कदाचित नहीं लाना चाहिए कि अमुक व्यक्ति का नुक़सान हो. हमें सदा ही दूसरों की भलाई के बारे में ही सोचना चाहिए. आदर्श स्थिति तो यह होगी कि हम सोचें कि चाहे मेरा नुक़सान हो जाए परंतु दूसरे का सदैव भला ही हो. कई बार हम मन में अहंकार का भाव आने के कारण दूसरों को भला बुरा कह देते हैं. जब कुछ समय बाद, हम हमारा यह शरीर त्याग कर इस दुनिया को छोड़ कर परलोक जाएँगे तब हमारे अपने अंग ही हमारे साथ नहीं चलेंगे तो फिर अन्य संपत्तियों की तो बात ही क्या है. ज़रा सोचें, रावण जो अपने समय में ब्रह्माण्ड में सबसे शक्तिशाली व्यक्ति कहा जाता था, आज कहाँ है? आज सहस्रबाहु कहाँ है, जिसकी हजार बाहें थीं एवं जो रावण के दस सिरों को अपनी बाहों में जकड़कर अपने बच्चों का मनोरंजन करता था. कहाँ है बाली, जिसने रावण को अपने बाहुपाश में जकड़ लिया था. कहाँ है ताकतवर हिरण्यकशिपु? कहाँ है महर्षि कपिल देव जिसने एक क्षण में राजा सगर के साठ हजार पुत्रों को राख में परिवर्तित कर दिया था. कहने का तात्पर्य यह है कि जब इतने बलशाली एवं बाहुबली व्यक्ति भी नहीं रहे तो फिर हम और आप की कितनी क्षमता है. इस धरा पर कोई भी व्यक्ति सदैव रहने के लिए नहीं आया है. अपने कर्मों के अनुसार फल भोग कर सभी को एक दिन इस संसार से कूच करना ही है. फिर यह प्रपँच क्यों और किसके लिए?

-प्रह्लाद सबनानी, ग्वालियर

सद्गुरु शान्तिप्रकाश अमृतवाणी

प्रभु को प्रेम व श्रद्धा से याद करें तो वे निश्चय ही आपकी देखरेख करेंगे, आपकी सुरक्षा करेंगे।

भक्त और भगवान का संबंध

प्रेरक प्रसंग

एक बार की बात है एक संत जगन्नाथ पुरी से मथुरा की ओर आ रहे थे, उनके पास बड़े सुंदर ठाकुर जी थे। वे संत उन ठाकुर जी को हमेशा साथ ही लिए रहते थे और बड़े प्रेम से उनकी पूजा अर्चना कर लाड़ लड़ाया करते थे। ट्रेन से यात्रा करते समय बाबा ने ठाकुर जी को अपनें बगल की सीट पर रख दिया और अन्य संतो के साथ हरी चर्चा में मग्न हो गए।

जब ट्रेन रुकी और सब संत उतरे तब वे सत्संग में इतनें मग्न हो चुके थे कि झोला गाड़ी में ही रह गया ! उसमें रखे ठाकुर जी भी वहीं गाड़ी में रह गए। संत सत्संग की मस्ती में भावनाओं में ऐसा बहे कि ठाकुर जी को साथ लेकर आना ही भूल गए। बहुत देर बाद जब उस संत के आश्रम पर सब संत पहुंचे और भोजन प्रसाद पाने का समय आया तो उन प्रेमी संत ने अपने ठाकुर जी को खोजा और देखा कि हमारे ठाकुर जी तो हैं ही नहीं।

संत बहुत व्याकुल हो गए बहुत रोने लगे परंतु ठाकुर जी मिले नहीं। उन्होंने ठाकुर जी के वियोग में अन्न जल लेना स्वीकार नहीं किया। संत बहुत व्याकुल होकर विरह में अपने ठाकुर जी को पुकारकर रोने लगे।

तब उनके एक पहचान के संत ने कहा महाराज मै आपको बहुत सुंदर चिन्हों से अंकित नये ठाकुर जी दे देता हूँ ,परंतु उन संत ने कहा कि हमें अपने वही ठाकुर चाहिए जिनको हम अब तक लाड़ लड़ाते आये हैं। तभी एक दूसरे संत ने पूछा आपने उन्हें कहा रखा था ? मुझे तो लगता है गाड़ी में ही छूट गए होंगे।

एक संत बोले अब कई घंटे बीत गए है। गाड़ी से किसी ने निकाल लिए होंगे और फिर गाड़ी भी बहुत आगे निकल चुकी होगी। इस पर वह संत बोले मैं स्टेशन मास्टर से बात करना चाहता हूँ वहाँ जाकर। सब संत उन महात्मा को लेकर स्टेशन पहुंचे। स्टेशन मास्टर से मिले और ठाकुर जी के गुम होने की शिकायत करने लगे। उन्होंने पूछा कि कौन सी गाड़ी में आप बैठ कर आये थे।

संतो ने गाड़ी का नाम स्टेशन मास्टर को बताया तो वह कहने लगा महाराज ! कई घंटे हो गए यही वाली गाड़ी ही तो यहां खड़ी हो गई है और किसी प्रकार भी आगे नहीं बढ़ रही है। न कोई खराबी है न अन्य कोई दिक्कत कई सारे इंजीनियर सब कुछ चेक कर चुके हैं, परंतु कोई खराबी दिखती है नहीं। महात्मा जी बोले अभी आगे बढ़ेगी, मेरे बिना मेरे प्यारे कही अन्यत्र कैसे चले जायेंगे वे महात्मा ट्रेन के डिब्बे के अंदर गए और ठाकुर जी वहीं रखे हुए थे जहां महात्मा ने उन्हें पधराया था। अपने ठाकुर जी को महात्मा ने गले लगाया और जैसे ही महात्मा जी उतरे गाड़ी आगे बढ़ने लग गयी। ट्रेन का चालक, स्टेशन मास्टर तथा सभी इंजीनियर सभी आश्चर्य में पड़ गए और बाद में उन्होंने जब यह पूरी लीला सुनी तो वे गद्गद् हो गए। उसके बाद वे सभी जो वहां उपस्थित उन सभी ने अपना जीवन संत और भगवन्त की सेवा में लगा दिया...

भगवान जी भी खुद कहते है ना-

भक्त जहाँ मम पग धरे, तहाँ धरूँ में हाथ !
सदा संग लाग्यो फिरूँ, कबहू न छोड़ू साथ !!

मत तोला कर इबादत को अपने हिसाब से, ठाकुर जी की कृपा देखकर अक्सर तराजू टूट जाते हैं !!

संकलित

रामकथा की महिमा

रामकथा सुर धेनु सम सेवत सब सुख दानि।
सत समाज सुर लोक सब को न सुनै अस जानि।।
रामकथा सुंदर कर तारी।
संसय बिहग उड़ावनिहारी।।
रामकथा कलि बिटप कुठारी।
सादर सुनु गिरिराजकुमारी।।

भगवान शंकर पार्वतीजी से कहते हैं- 'श्रीरामचन्द्र जी की कथा कामधेनु के समान सेवा करने से सब सुखों को देने वाली है और सत्पुरुषों के समाज ही सब देवताओं के लोक हैं, ऐसा जानकर इसे कौन न सुनेगा! श्रीरामचन्द्रजी की कथा हाथ की सुन्दर ताली है, जो सन्देह रूपी पक्षियों को उड़ा देती है. फिर रामकथा कलियुग रूपी वृक्ष को काटने के लिये कुल्हाड़ी है. हे गिरिराजकुमारी! तुम इसे आदरपूर्वक सुनो.

सद्गुरु हरिदासराम वचनावली

सन्त की कृपा एवं पूर्ण गुरु की दया दृष्टि जब तक नहीं होती तब तक परमार्थ की बातें सहज समझ में आने वाली नहीं।

जीवन का अंतिम सत्य

भगवान राम जानते थे कि उनकी मृत्यु का समय हो गया है। वह जानते थे कि जो जन्म लेता है उसे मरना ही पड़ता है। यही जीवन चक्र है। और मनुष्य देह की सीमा और विवशता भी यही है। उन्होंने कहा...''यम को मुझ तक आने दो। वैकुंठ धाम जाने का समय अब आ गया है''।

मृत्यु के देवता यम स्वयं अयोध्या में घुसने से डरते थे। क्योंकि उनको राम के परम भक्त और उनके महल के मुख्य प्रहरी हनुमान से भय लगता था। उन्हें पता था कि हनुमानजी के रहते यह सब आसान नहीं।

भगवान श्रीराम इस बात को अच्छी तरह से समझ गए थे कि, उनकी मृत्यु को अंजनी पुत्र कभी स्वीकार नहीं कर पाएंगे, और वो रौद्र रूप में आ गए, तो समस्त धरती कांप उठेगी।

उन्होंने सृष्टि के रचयिता भगवान ब्रह्मा से इस विषय मे बात की। और अपने मृत्यु के सत्य से अवगत कराने के लिए राम जी ने अपनी अंगूठी को महल के फर्श के एक छेद में से गिरा दिया! और हनुमान से इसे खोजकर लाने के लिए कहा। हनुमान ने स्वयं का स्वरुप छोटा करते हुए बिल्कुल भंवरे जैसा आकार बना लिया...और अंगूठी को तलाशने के लिये उस छोटे से छेद में प्रवेश कर गए। वह छेद केवल छेद नहीं था, बल्कि एक सुरंग का रास्ता था, जो पाताल लोक के नाग लोक तक जाता था। हनुमान नागों के राजा वासुकी से मिले और अपने आने का कारण बताया।

वासुकी हनुमान को नाग लोक के मध्य में ले गए, जहाँ पर ढेर सारी अंगूठियों का ढेर लगा था। वहां पर अंगूठियों का जैसे पहाड़ लगा हुआ था। ''यहां देखिए, आपको श्री रामकी अंगूठी अवश्य ही मिल जाएगी'' वासुकी ने कहा।

हनुमानजी सोच में पड़ गए कि वो कैसे उसे ढूंढ पाएंगे? यह भूसे में सुई ढूंढने जैसा था। लेकिन उन्हें राम जी की आज्ञा का पालन करना ही था। तो राम जी का नाम लेकर उन्होंने अंगूठी को ढूंढना शुरू किया। सौभाग्य कहें या राम जी का आशीर्वाद या कहें हनुमान जी की भक्ति... उन्होंने जो पहली अंगूठी उठाई, वो राम जी की ही अंगूठी थी। उनकी खुशी का ठिकाना न रहा। वो अंगूठी लेकर जाने को हुए, तब उन्हें सामने दिख रही एक और अंगूठी जानी पहचानी सी लगी। पास जाकर देखा तो वे आश्चर्य से भर गए! दूसरी भी अंगूठी जो उन्होंने उठाई वो भी राम जी की ही अंगूठी थी। इसके बाद तो वो एक के बाद एक अंगूठीयाँ उठाते गए, और हर अंगूठी श्री राम की ही निकलती रही। उनकी आँखों से अश्रु धारा फूट पड़ी!

'वासुकी यह प्रभु की कैसी माया है ? यह क्या हो रहा है? प्रभु क्या चाहते हैं? वासुकी मुस्कुराए और बोले,

''जिस संसार में हम रहते है, वो सृष्टि व विनाश के चक्र से गुजरती है। जो निश्चित है। जो अवश्यम्भावी है। इस संसार के प्रत्येक सृष्टि चक्र को एक कल्प कहा जाता है। हर कल्प के चार युग या चार भाग होते हैं। हर बार कल्प के दूसरे युग मे अर्थात त्रेता युग में, राम अयोध्या में जन्म लेते हैं। एक वानर इस अंगूठी का पीछा करता है...यहाँ आता है और हर बार पृथ्वी पर राम मृत्यु को प्राप्त होते हैं। इसलिए यह सैकड़ों हजारों कल्पों से चली आ रही अंगूठियों का ढेर है। सभी अंगूठियां वास्तविक हैं। सभी श्री राम की ही है। अंगूठियां गिरती रहीं है...और इनका ढेर बड़ा होता रहा। भविष्य के रामों की अंगूठियों के लिए भी यहां पर्याप्त स्थान है''।

हनुमान एकदम शांत हो गए। और तुरन्त समझ गए कि, उनका नाग लोक में प्रवेश और अंगूठियों के पर्वत से साक्षात्कार कोई आकस्मिक घटी घटना नहीं थी। बल्कि यह प्रभु राम का उनको समझाने का मार्ग था कि, मृत्यु को आने से रोका नहीं जा सकता। राम मृत्यु को प्राप्त होंगे ही। पर राम वापस आएंगे...यह सब फिर दोहराया जाएगा।

यही सृष्टि का नियम है, हम सभी बंधे हैं इस नियम से। संसार समाप्त होगा। लेकिन हमेशा की तरह, संसार पुनः बनता है और राम भी पुनः जन्म लेंगे।

प्रभु राम आएंगे...उन्हें आना ही है...उन्हें आना ही होगा।

संकलित

सद्‌गुरु टेऊँराम अमृतोपदेश

अगर भगवान ने आपको कुछ दिया है तो उस दिये हुए धन में से गरीबों, अनाथों, विधवाओं और मुसाफिरों की सेवा और सहायता करो।

कुरुक्षेत्र में 700 श्लोकी हवन अनुष्ठान सम्पन्न

कुरुक्षेत्र। कुरुक्षेत्र तीर्थ के ज्योतिसरोवर (जहां श्री कृष्ण भगवान ने अर्जुन को गीता का ज्ञान-उपदेश दिया था) उसी स्थान पर १ सितंबर (सोमवार) को परम पूज्य गुरुवर स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज एवं पूज्य संत मण्डली के पावन सानिध्य में ७०० श्लोकी महायज्ञ अनुष्ठान किया गया ! सर्वप्रथम भगवान एवं गुरुजनों के विग्रहों को माल्यार्पण कर पूजा की गयी तत्पश्चात् हवन प्रारम्भ किया गया । कार्यक्रम के बाद साधु-सन्तों का भोजन-भण्डारा भी किया गया जिसमें साधु सन्तों को भोजन कराकर यथायोग्य भेंटादि दी गयी । कार्यक्रम में जयपुर, दिल्ली, समालखा, पलवल एवं अन्य शहरों से काफी संख्या में प्रेमीगण शामिल हुए ।

सद्‌गुरु सर्वानन्द सन्देश धन सम्पत्ति, ऐश्वर्य से मोहित मनुष्य कल्याण पथ से भ्रष्ट हो जाता है।

समाचार डायरी/ नि:शुल्क फिजियोथेरेपी कैंप में 125 से अधिक लोग हुए लाभान्वित

जयपुर । गुलाबी नगरी, लघु काशी जयपुर में आस्था के पावन केंद्र श्री अमरापुर स्थान जयपुर में रविवार ७ सितंबर को श्री अमरापुर सेवा समिति एवं जेनयू के संयुक्त तत्वाधान में नि:शुल्क फिजियोथेरेपी शिविर (कैम्प) का आयोजन किया गया। शिविर का आरम्भ प्रातः ६.०० बजे पूज्य संत स्वामी मनोहर लाल जी महाराज, पूज्य संत श्री मोनूराम जी महाराज एवं संत मंडल द्वारा दीप प्रज्वलित कर किया गया। शिविर के अंतर्गत कमर दर्द, घुटनों का दर्द, गर्दन का दर्द, साइटिका, कोहनी का दर्द, बच्चों की विकलांगता, मांसपेशियों में खिंचाव आदि की समस्या का नि:शुल्क परामर्श डॉक्टरों द्वारा दिया गया ! पूज्य संत श्री मोनूराम जी महाराज ने बताया कि फिजियोथेरेपिस्ट लोगों को फिट रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, इस बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए इस शिविर का आयोजन किया गया है। संतो ने बताया कि फिजियोथेरेपिस्ट पद्धति के द्वारा पुराने से पुराने शारीरिक दर्द का उपचार सरल प्रकार से किया जा सकता है, जिससे बहुत ही कम समय में आराम महसूस होता है ! फिजिकल थेरेपी के जरिए लोगों को चोट से उबरने और शरीर की अधिकतम गति और शारीरिक कार्य को बनाए रखने में मदद मिलती है, इसके जरिए क्रोनिक कंडीशन जैसी स्थिति से भी निपटा जा सकता है। शिविर में १२५ से अधिक लोग लाभान्वित हुए, पूर्व में भी समय समय पर इस प्रकार के शिविरो का आयोजन किया गया है। शिविर के अंतर्गत जेनयू के सहयोगी नंदिनी, सोनाली, कुंजल, पीयूष, खुशी, हरदीप, वाशु, टीना, सागर, सुंदर दास तोरानी आदि ने अपनी सेवाएं प्रदान की ।

संतो द्वारा शिविर के अंतर्गत आए सभी डॉक्टर एवं परामर्शदाताओं को पखर-प्रसाद देकर सेवा के क्षेत्र में सदैव इसी प्रकार कार्य करते रहने का आशीर्वाद दिया गया !!

सदगुरु टेऊँराम चौथ महोत्सव पर श्री अमरापुर दरबार पर रिया, हेमा, कृतिका द्वारा सजाई गई आकर्षक रंगोली....

सद्गुरु शान्तिप्रकाश अमृतवाणी

आप प्रभु के कमल चरणों में स्वयं को समर्पित करें तो भगवान आपके सब कार्य सिद्ध करेंगे ।

धुन:- चाँदी की दीवार ना तोडी ...

नया भजन

छल-बल से जोड़ी माया का, अब तक नहीं सुरूर गया,
बेबस हुआ, उमरिया बीती, झूठा नहीं गुरुर गया,
छल-बल से जोड़ी माया का .....।

अपने और पराऐ छूटे, छूटे सब रिश्ते-नाते,
पाप कर्म के अब तक तेरे, बंद हुए ना हैं खाते,
इस काया का गर्व है झूठा, मन तेरा बेनूर हुआ,
छल-बल से जोड़ी माया का, अब तक नहीं सुरूर गया,
बेबस हुआ, उमरिया बीती, झूठा नहीं गुरुर गया,
छल-बल से जोड़ी माया का .....।

वो ही पहला हठ है बाकी, जल गई रस्सी, बट है बाकी,
याद किया ना परमेश्वर को, मेरा-मेरी रट है बाकी,
अन्त भरोसे औरों के तूँ, जीने को मजबूर हुआ,
छल-बल से जोड़ी माया का, अब तक नहीं सुरूर गया,
बेबस हुआ, उमरिया बीती, झूठा नहीं गुरुर गया,
छल-बल से जोड़ी माया का .....।

वक्त वही आने वाला है, सब कुछ छूट जाने वाला है,
तेरा कुछ भी यहाँ नहीं तूँ, अपने घर जाने वाला है,
जप ले नाम गुरु का काहे, असली घर से दूर हुआ,
छल-बल से जोड़ी माया का, अब तक नहीं सुरूर गया,
बेबस हुआ, उमरिया बीती, झूठा नहीं गुरुर गया,
छल-बल से जोड़ी माया का .....।

माया को ही सब कुछ समझा, ऐ पगले तू अब तो थम जा,
मान-बड़ाई,दौलत झूठी, छोड़ के गुरु भक्ति में रमजा,
ढो-ढो झूठा बोझा 'वधवा', काहे तू मगरूर हुआ,
छल-बल से जोड़ी माया का, अब तक नहीं सुरूर गया,
बेबस हुआ, उमरिया बीती, झूठा नहीं गुरुर गया,
छल-बल से जोड़ी माया का, अब तक नहीं सुरूर गया ...।

मेरे घर भोग लगा जाओ

(गुरूदेव भगवान को दास का निमंत्रण)

हुआ बहुत समय, मेरे सत्गुरू जी,
इस नयनों की प्यास, बुझा जाओ,
कुटिया में घुमाकर चरण-कमल,
चन्दन उस रज को बना जाओ.।

1. हम कब से लेकर आस खडे,
नयनन से असुअन मोती झडें,
अब इतना ना हमको तरसाओ,
मेरे सत्गुरू अब घर आ जाओ,
कुटिया में फिराकर चरण-कमल,
चन्दन उस रज को बना जाओ.।

2. इन स्वाँसों का कौन भरोसा है,
मेरी आस का धागा छोटा है,
दे दर्शन प्यास बुझा जाओ,
इस मन की आस पुजा जाओ,
कुटिया में फिराकर चरण-कमल,
चन्दन उस रज को बना जाओ.।

3. कई बार है तुमसे विनय करी,
विनती कर अखियाँ बहुत झड़ी,
प्रभु अब तो वचन निभा जाओ,
अब और ना हमको तड़फाओ,
कुटिया में फिराकर चरण-कमल,
चन्दन उस रज को बना जाओ.।

4. तेरे आने का ख्वाब अधूरा रहे,
मेरा सत्गुरू कैसे ये बात सहे,
ज्यों थे राम गऐ दर भीलनी के,
घर 'वधवा' के, भोग लगा जाओ,
कुटिया में, फिराकर चरण-कमल,
चन्दन, उस रज को, बना जाओ.।

प्रेम प्रकाशी दास हरकेश वधवा, समालखा मण्डी (हरियाणा)

सद्गुरू हरिदासराम वचनावली

संसार के समस्त लोगों के द्वारा परम शांति को प्राप्त करने के लिये ही प्रयास किये जा रहे हैं लेकिन वह शांति सबको मिलती नहीं।

श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष पूज्य गुरुवर

सद्गुरु स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज

का यात्रा कार्यक्रम अगस्त 2025 से जनवरी 2026 तक

17 से 19 सितम्बर 2025	ब्यावर
20 से 22 सितम्बर 2025	तिरोड़ा, गोंदिया
23-24 सितम्बर 2025	बालाघाट
25-26 सितम्बर 2025	सिवनी
27-28 सितम्बर 2025	भंडारा
29 सित. से 1 अक्टूबर 2025	धमतरी, दल्ली राजहरा
2 से 3 अक्टूबर 2025	बिलासपुर
4 से 5 अक्टूबर 2025	कोरबा
6 से 8 अक्टूबर 2025	भाटापारा
9 से 11 अक्टूबर 2025	रायपुर
12 से 14 अक्टूबर 2025	पलवल
15 अक्टूबर 2025	हथीन
16 से 17 अक्टूबर 2025	पिनगवां
18 अक्टूबर 2025	अजमेर (धनतेरस)
19 से 23 अक्टूबर 2025	जयपुर (दीपावली)
23 अक्टूबर 2025	यात्रा
24 से 26 अक्टूबर 2025	पूना
27 से 28 अक्टूबर 2025	हरिद्वार
29 अक्टूबर 2025	यात्रा
30 अक्टूबर 2025	जयपुर (गोपष्टमी महोत्सव)
31 अक्टूबर से 01 नवम्बर 2025	सीकर
02 से 05 नवम्बर 2025	कोटा
06 नवम्बर 2025	यात्रा
07 नवम्बर 2025	राजकोट
08 से 09 नवम्बर 2025	भावनगर
10 से 11 नवम्बर 2025	जामनगर
12 से 13 नवम्बर 2025	गांधीधाम
14 नवम्बर 2025	यात्रा
15 से 17 नवम्बर 2025	दिल्ली

सद्गुरु टेऊँराम अमृतोपदेश विवाह आदि शुभ अवसरों पर मांस और शराब का प्रयोग करना महापाप है।

18 से 19 नवम्बर 2025	गया (पिंडदान)
20 से 22 नवम्बर 2025	काशी
23 से 25 नवम्बर 2025	प्रयागराज
26 नवम्बर 2025	अयोध्या
27 से 28 नवम्बर 2025	लखनऊ
29 से 30 नवम्बर 2025	जयपुर
01 दिसम्बर 2025	अजमेर (प्रातःकाल गीता जयंती उत्सव)
01 दिसम्बर 2025	भीलवाड़ा (सायंकाल सत्संग)
02 से 03 दिसम्बर 2025	नसीराबाद, केकड़ी
04 से 06 दिसम्बर 2025	अहमदाबाद
07 से 09 दिसम्बर 2025	सूरत
10 से 31 दिसम्बर 2025	अनिर्णीत
01 से 03 जनवरी 2026	मुम्बई
04 से 05 जनवरी 2026	लोनावाला
06 से 07 जनवरी 2026	पिम्परी
08 जनवरी 2026	यात्रा
09 से 13 जनवरी 2026	मनीला (विदेश यात्रा)
14 जनवरी 2026	यात्रा
15 से 16 जनवरी 2026	चैन्नई
17 से 19 जनवरी 2026	श्री रामेश्वरम धाम

व्रत–पर्व–उत्सव

17 सितम्बर 2025–बुधवार– एकादशी
21 सितम्बर 2025– रविवार– सर्वपितृ अमावस्या
22 सितम्बर 2025–सोमवार– शारदीय नवरात्रा प्रारम्भ
23 सितम्बर 2025– मंगलवार– चन्द्र दर्शन, असूचण्ड
27 सितम्बर 2025– शनिवार– चौथ (मंगलमूर्ति सतगुरु स्वामी श्री टेऊँराम जी महाराज का मासिक अवतरण दिवस)
30 सितम्बर 2025– मंगलवार– श्री दुर्गाष्टमी
01 से 05 अक्टूबर 2025– सद्गुरु सर्वानन्द जन्मोत्सव
02 अक्टूबर 2025– गुरुवार– विजयादशमी (दशहरा)
03 अक्टूबर 2025–शुक्रवार– एकादशी
07 अक्टूबर 2025–मंगलवार– पूर्णिमा
10 अक्टूबर 2025–शुक्रवार– गणेश चर्तुर्थी, करवाचौथ व्रत
17 अक्टूबर 2025–शुक्रवार– एकादशी
18 अक्टूबर 2025–शनिवार– धनतेरस
20/21 अक्टूबर 2025– सोम–मंगल– अमावस्या, दीपावली
22 अक्टूबर 2025– बुधवार– गोवर्धन पूजा, अन्नकूट महोत्सव
23 अक्टूबर 2025– गुरुवार– चन्द्र दर्शन, भाईदूज, कार्तिकोत्सव प्रारंभ
27 अक्टूबर 2025– सोमवार– चौथ (मंगलमूर्ति सतगुरु स्वामी श्री टेऊँराम जी महाराज का मासिक अवतरण दिवस)
30 अक्टूबर 2025– गुरुवार–गोपष्टमी
31 अक्टूबर 2025– शुक्रवार–आंवला नवमी

सद्गुरु सर्वानन्द सन्देश

जब आप अज्ञान की नींद से जागेंगे तो
यह सारा जगत स्वप्न की तरह हो जायेगा।

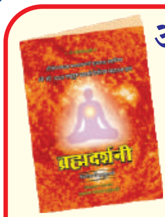

आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज द्वारा रचियलु
‘ब्रह्मदर्शनी’
सिंधीअ में समुझाणी

-प्रो. लछमण परसराम हर्दवाणी (पुणे)

पोएं अगस्त २०२५ अंक खां अगिते-

।।दशपदी - 18 ।।

हरि इच्छा जाने निज इच्छा, हरि मनसा जाने निज मनसा।
हरि चिन्ता जाने निज चिन्ता, हरि ममता जाने निज ममता।
हरि का भाणा जिस मन भावे, सोय करे जो हरी करावे।
सब कुछ हरि लख आप न माने, आदि अन्त मध्य हरि इक जाने।
मैं मेरा हरि माहिं मिलावे, कह टेऊँ वह भक्त कहावे।। 7 ।।

भगवान जे ‘भक्त’ जूं विशेषताऊं बुधाईंदे सतुगुरु स्वामी टेऊँराम महाराज जनि चवनि था, “ हरीअ जो भक्तु/ भगतु केरु थो कहलाए/सडाए? जेको परमेश्वर जी इच्छा पंहिंजी इच्छा तो समुझे ; जेको हरीअ जी मन्शा/इच्छा पंहिंजी मन्शा थो समुझे ; जेको प्रभूअ जी चिन्ता पंहिंजी चिन्ता थो लेखे ; जेको ईश्वर जी ममता पंहिंजी ममता थो जाणे ; भगवान जो भाणो जंहिंजे मन खे वणे थो ऐं हू उहो ई थो करे, जेको हरी हुन खां कराए थो ; जेको सभु कुझु पंहिंजो न मञींदे/ समुझंदे हरीअ जो ई डिसे/मञे थो ; जेको आरंभ ऐं अंत जे विच में हिक भगवान खे ई जाणे थो ऐं जेको ‘मां’ (अहं) ऐं ‘मुंहिंजो’ खे हरीअ में मिलाए थो छडे, उहो ‘भक्तु’ कहलाए थो. ”

आराधना करण वारे खे ‘भक्तु’ चयो वियो आहे. भक्ति मार्ग जे सिद्धांत अनुसार भक्तु/भगतु उहो आहे, जंहिं ईश्वर जे भजन में पंहिंजो सारो जीवनु समर्पित करे छडियो आहे. भगतु सिर्फु ईश्वर जी उपासना में मगनु हूंदो आहे. हुन जो हृदय पवित्रु हूंदो आहे. हुन जे मन में प्रभूअ सां मिलण जी आस हूंदी आहे. भक्त ऐं भगवान जो नातो आत्मा ऐं परमात्मा जो आहे. जडहिं आत्मा परमात्मा जो भजनु कंदी आहे ऐं उन में पाण खे समाए छडींदी आहे, तडहिं आत्मा खे परमात्मा जी प्रापती थींदी आहे. भक्त लाइ ‘उपासक’ या ‘शेवक’ शब्दनि जो पिणु प्रयोगु कयो वेंदो आहे. सचो भगतु उहो आहे, जेको निस्वार्थी ऐं सभिनी सां स्नेहु कंदडु आहे, जंहिंजे मन में अहंकारु नाहे, जंहिं पंहिंजूं इंद्रियूं पंहिंजे कब्जे में कयूं आहिनि. जंहिं पंहिंजो मनु ऐं बुद्धी ईश्वर खे अर्पणु करे छडी आहे, जेको निष्काम कर्म कंदडु आहे, जंहिंजो हिर्दो भगितीअ सां भरियलु आहे. अहिड़ो अनासक्त भगतु भगवान खे प्यारे हूंदो आहे. भगवान जी इच्छा सां हलंदड़ सचा भगत डिसो- हनुमान, लक्ष्मण, भगत पहिलाजु/प्रह्लाद, कृष्ण भक्तु सूरदास, रामभक्तु तुलसीदास, मीरांबाई, संत नामदेव, संत तुकाराम, भक्तु पुंडलिक, भक्तु सदना/नो आदि. इन्हनि जो सभु कुझु भगवान खे अर्पणु कयलु हो.

(हलदंडु)

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक : संतोष पंजवानी द्वारा मुद्रक : सुनील पंजवानी, सन्नी प्रिन्टर्स, मामा का बाजार, लश्कर, ग्वालियर से मुद्रित करवाकर, 401-झूलेलाल अपार्टमेंट, कृष्णा एन्क्लेव,समाधिया कॉलोनी,तारागंज, लश्कर, ग्वालियर-474001 से प्रकाशित किया गया।
कार्यालयः प्रेम प्रकाश सन्देश, प्रेम प्रकाश आश्रम, गाढ़वे की गोठ, लश्कर, ग्वालियर-474001
(कार्यालय फोन 0751-4045144 पर सम्पर्क समय प्रातः 8 से 10 बजे तक (तात्कालिक व्यवस्था)
सम्पादक : प्रहलाद सबनानी प्रबन्ध सम्पादक : शंकरलाल सबनानी

सूचना

समस्त सम्माननीय सदस्यों के सूचनार्थ उनके प्रेषण पते के ऊपर सदस्यता क्रमांक रसीद संख्या व शुल्क अवधि लिखी हुई है, शुल्क अवधि समाप्त होने की सूचना को आपके पते के ऊपर **LAST COPY** लिखकर उसे **BOLD** करके दर्शाया गया है. पत्रिका की निरंतर प्राप्ति के लिये अपनी सदस्यता का नवीनीकरण सदस्यों को यथाशीघ्र करा लेना चाहिए.

– व्यवस्थापक

किसी कारणवश वितरण न होने पर निम्न पते पर वापस करें-

सम्पादक, प्रेम प्रकाश सन्देश
प्रेम प्रकाश आश्रम,
गाढ़वे की गोठ, लश्कर,
ग्वालियर 474001 (म.प्र.)